हिन्दी दैनिक

गौरव पूर्ण भारत

R.N.I.NO.-DELHIN/2009/30015

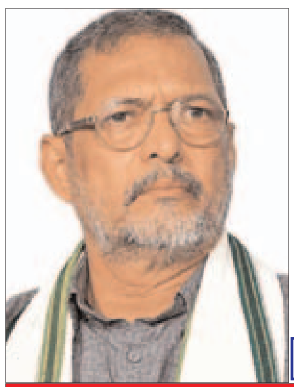

5 अलविदा नाना पाटेकर,अभिनय का दमदार सितारा खामोश... | gauravpuranbharat@gmail.com | 6 कागिसो रबाडा ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ डरबन टेस्ट से बाहर....

वर्ष-18 अंक-06 नई दिल्ली, शनिवार 10 अक्टूबर 2026 पृष्ठ- 6 मूल्य 1 रुपये

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम पर होगा जेवर एयरपोर्ट, योगी कैबिनेट का फैसला

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार की कैबिनेट की बैठक में शुक्रवार को जेवर एयरपोर्ट को लेकर बड़ा फैसला किया गया है। जेवर एयरपोर्ट को लेकर लिए गए फैसले में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बताया कि जेवर एयरपोर्ट का नाम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम पर रखने का प्रस्ताव पास कर दिया गया है। मुख्यमंत्री योगी ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल प्रधानमंत्री का आभारी है कि उन्होंने राज्य को जेवर स्थित नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट उपहार में दिया है, जो उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा एयरपोर्ट होगा और भविष्य में देश का सबसे बड़ा विमानन केंद्र बनने जा रहा है। मंत्रिमंडल ने नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट का नाम 'नरेंद्र मोदी इंटरनेशनल एयरपोर्ट नोएडा-जेवर' रखने के प्रस्ताव को भी मंजूरी दी है। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा, आस्था, आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के प्रति प्रधानमंत्री का योगदान सदियों तक याद रखा जाएगा। उनकी कोशिशों से 500 साल का इंतजार खत्म हुआ और अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि मंदिर में देवता की प्राण प्रतिष्ठा का सपना सच हुआ। श्री काशी विश्वनाथ धाम का भव्य स्वरूप पीएम मोदी जैसे महान और समर्पित सेवक की दूरदर्शी सोच का नतीजा है। एक सदी पहले चोरी हुई देवी अन्नपूर्णा की मूर्ति को विदेश से वापस लाकर काशी विश्वनाथ मंदिर में फिर से स्थापित किया गया, साथ ही, 127 साल बाद पिपरहवा से भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेषों की भारत वापसी संभव हो सकी। प्रयागराज महाकुंभ में 66 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालुओं के आने

का रिकॉर्ड बना। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा, उत्तर प्रदेश ने 'सबका साथ, सबका विकास' के मूल मंत्र को जमीनी स्तर पर साकार किया है। सरकार ने गरीबों, वंचितों, पिछड़े वर्गों, युवाओं, महिलाओं और किसानों सहित समाज के सभी वर्गों के उत्थान के लिए सराहनीय और प्रेरणादायक पहल की हैं। प्रधानमंत्री की समग्र दृष्टि के कारण देश के किसानों को सम्मान और सुरक्षा प्राप्त हुई है। हमारे किसानों के कल्याण के लिए, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत उत्तर प्रदेश के 3 करोड़ से अधिक किसानों के खातों में 1 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि सीधे हस्तांतरित की गई है। सीएम योगी आदित्यनाथ ने आगे कहा, प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 65 लाख से अधिक गरीब परिवारों को घर मिले हैं। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत लगभग 15 करोड़ नागरिकों को मुफ्त अनाज उपलब्ध कराया जा रहा है, जो 3.67 करोड़ राशन कार्ड धारक परिवारों से संबंधित हैं। जल जीवन मिशन के तहत, 2.46 करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को नल के पानी के कनेक्शन प्रदान किए गए हैं। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट से आज यानी सोमवार से कमर्शियल फ्लाइट का संचालन शुरू हो चुका है। लखनऊ से आने वाली पहली फ्लाइट जेवर एयरपोर्ट पर लैंड भी कर गई है। लखनऊ के चौधरी चरण सिंह इंटरनेशनल एयरपोर्ट से इंडिगो की कमर्शियल फ्लाइट ने उड़ान भरी थी और अब वह जेवर एयरपोर्ट पर पहुंच चुकी है। अब यही फ्लाइट लखनऊ में लैंड हो गई है।

समाधान शिविरों में आने वाली समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर करें समाधान -नायब सिंह सैनी

चंडीगढ। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि समाधान शिविर सरकार की फ्लैगशिप योजना है। इसलिए सभी अधिकारी हर जिलों में लगाए जाने वाले शिविरों में आने वाली समस्याओं का समाधान प्राथमिकता के आधार पर सुनिश्चित करें। हर समस्या का समाधान नवीनतम तकनीकी का लाभ उठाते हुए करें जिससे कोई भी समस्या लंम्बित नही रहेगी। मुख्यमंत्री शुक्रवार को चण्डीगढ़ में समाधान प्रकोष्ठ समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। बैठक में मुख्य सचिव अनुराग रस्तोगी, मुख्यमंत्री के ओएसडी बीबी भारती, स्पेशल आफिसर भोपाल सिंह खदरी भी मौजूद रहे। इसके अलावा सभी जिलों के उपायुक्त एवं प्रशासनिक अधिकारी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सीधे जुड़े। मुख्यमंत्री ने कहा कि समाधान प्रकोष्ठ शिकायत निवारण प्रक्रिया दोहरी सत्यापन व्यवस्था एवं राज्य स्तरीय कार्रवाई का ढांचा है। इसमें समस्याओं को रिओपन कर विस्तार से समीक्षा की जाती है और संबंधित शिकायतकर्ता से फोन करके उसके बारे में जानकारी ली जाती है। इसलिए राज्य स्तर पर 5591 शिकायतें दोबारा खोली गई हैं। उन्होंने कहा कि पिछले एक साल के दौरान समाधान शिविरों में 92848 शिकायतें आई, जिनमें से 55365 शिकायतों का समाधान किया गया। मुख्यमंत्री ने कहा कि समाधान की गई शिकायतों में से 40000 शिकायतकर्ताओं से सीधे फोन कर समस्या के समाधान बारे राज्य स्तर पर जानकारी ली गई तथा 11500 शिकायतों का रिओपन होने के बाद निवारण हुआ है। यह बहुत ही सराहनीय कार्य किया गया। उन्होंने कहा कि रिओपन प्रतिशत अधिक नहीं होना चाहिए, जिन जिले की 35 प्रतिशत से ज्यादा शिकायतें रिओपन हुई हैं तो वे जिले स्टेट एवरेज में आने के लिए बेहतर कार्य करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि अधिकारी शिविर में आई समस्याओं को लेकर कोई औपचारिकता न करते हुए, उनका समाधान निकालने का कार्य करें। यदि इन समस्याओं का मौके पर ही समाधान हो जाता है, तो जनता को उनका तत्काल लाभ मिलेगा। जनता से सीधे मिलें और समस्या बारे विस्तार से जानकारी लें, जिससे उनकी सुनवाई एवं समाधान बेहतर किया जा सकेगा और समस्या दोबारा भी नहीं आएगी। इसलिए समाधान शिविर में आए व्यक्ति की समस्या के निवारण करने के कार्य में तेजी लाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि अधिकारी पूर्ण तालमेल एवं आपसी सामंजस्य के साथ समस्याओं का निपटान करें। इसके अलावा, हर समाधान शिविर में किसी जिम्मेदार अधिकारी की ड्यूटी लगाई जाए। यदि ऐसा नहीं पाया गया तो संबंधित अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। इसके अलावा जिलों से एमिनेंट पर्सन भी शिविर में अवश्य शामिल किए जाए। उन्होंने कहा कि शिविर की समस्याओं के समाधान की प्रकाशित विज्ञप्ति और एटीआर भी समय पर अपलोड की जाए।

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने विभिन्न विभागों को एशियाई हॉकी चैंपियंस ट्रॉफी के लिए विश्वस्तरीय प्रबंध सुनिश्चित करने के निर्देश दिए

चंडीगढ़। मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने 27 अक्टूबर से 5 नवंबर तक होने वाली एशियाई हॉकी चैंपियंस ट्रॉफी के लिए आपसी समन्वय, अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुविधाओं, शहरों के सौंदर्यीकरण और मेहमाननवाजी पर ध्यान केंद्रित करते हुए सभी विभागों को विश्वस्तरीय प्रबंध सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने लोगों का उत्साह बढ़ाने के लिए राज्यस्तरीय ट्रॉफी टूर और विद्यार्थियों की अधिकतम भागीदारी का आह्वान भी किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि पंजाब को अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजनों की मेजबानी में नए कीर्तिमान स्थापित करने चाहिए।(चैंपियंस ट्रॉफी के संबंध में उच्चस्तरीय बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा, फ़यह सुनिश्चित किया जाएगा कि यह प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजन पंजाब के खेल इतिहास में नया मील का पत्थर स्थापित करे। उन्होंने सभी विभागों को आपसी समन्वय के साथ काम करने और भाग लेने वाली टीमों, अधिकारियों, दर्शकों तथा आने वाले मेहमानों को विश्वस्तरीय सुविधाएं प्रदान करने में कोई कसर न छोड़ने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा, पंजाब अपनी समृद्ध हॉकी विरासत और भारतीय खेलों में महान योगदान के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है। हमें अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजनों के आयोजन में नए कीर्तिमान स्थापित करने चाहिए और भाग लेने वाली टीमों, अधिकारियों, दर्शकों तथा मेहमानों को विश्वस्तरीय सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत, चीन, मलेशिया, जापान, बांग्लादेश और दक्षिण कोरिया सहित प्रमुख हॉकी देशों की भागीदारी से पंजाब अंतरराष्ट्रीय खेल जगत के केंद्र में आ जाएगा और इससे अपनी मेहमाननवाजी, बुनियादी ढांचे, खेल उपलब्धियों तथा सांस्कृतिक परंपराओं को प्रदर्शित करने का अवसर मिलेगा।

गुरुग्राम में 22 करोड़ रुपये के विकास कार्यों का शिलान्यास नागरिक अस्पताल का निर्माण जल्द होगा शुरू-आरती सिंह राव

चंडीगढ़। हरियाणा की स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान तथा आयुष मंत्री आरती सिंह राव ने कहा कि कि हम राजनीति अपने लिए नहीं, बल्कि जनता के हितों और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए करते हैं। हमारा उद्देश्य जनता के बीच रहकर उनकी समस्याओं को सुनना, उनकी जरूरतों को समझना और उनका समाधान सुनिश्चित करना है। उन्होंने कहा कि जनप्रतिनिधि होने के नाते हमारी जिम्मेदारी है कि हम जनता और सरकार के बीच एक मजबूत सेतु बनें, ताकि सरकार की योजनाओं का लाभ प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक पहुंचे और लोगों को अपने छोटे-बड़े कार्यों के लिए अनावश्यक परेशानी का सामना न करना पड़े। स्वास्थ्य मंत्री शुक्रवार को गुरुग्राम के वार्ड 15 में विभिन्न विकास कार्यों का शिलान्यास करने उपरांत

उपस्थित जन को संबोधित कर रही थी। कार्यक्रम में पटौदी की विधायक बिमला चौधरी और सोहना के विधायक तेजपाल तंवर भी मौजूद रहे। स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि गुरुग्राम तेजी से विकसित हो रहा शहर है और भविष्य में इसकी आबादी तथा स्वास्थ्य सेवाओं की जरूरतें और बढ़ेंगी। ऐसे में हमारी प्राथमिकता है कि शहर के विस्तार और लोगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए स्वास्थ्य सुविधाओं को लगातार मजबूत किया जाए। उन्होंने कहा कि गुरुग्राम नागरिक अस्पताल का ड्राइंग कार्य पूरा हो चुका है। जल्द ही सभी आवश्यक प्रक्रियाओं के तहत धरातल पर कार्य का शुभारम्भ किया जाएगा। स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि लोगों की मांग के अनुरूप स्वास्थ्य संस्थानों में आवश्यक सुविधाओं का विस्तार, चिकित्सा सेवाओं का सुदृढ़ीकरण तथा आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में कदम उठाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि प्रत्येक नागरिक को समय पर सुलभ और बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना सरकार की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि जनता के लिए हमारे दरवाजे हमेशा खुले हैं और जनता का विश्वास, सहयोग तथा उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरना ही हमारी प्राथमिकता है। आरती सिंह राव ने इस अवसर पर नगर निगम गुरुग्राम के वार्ड 15 में 22 करोड़ रुपये की लागत के तीन विकास कार्यों का शिलान्यास भी किया।

इनमें सेक्टर-66 में सड़कों के निर्माण, फुटपाथ एवं साइकिल ट्रैक विकसित करने तथा सीवरेज पाइप लाइन बिछाने, मैदावास गाँव में सम्राट मिहिर भोज चौक से गांव कादरपुर रोड (डीएलएफ 30एम रोड) तक सड़क का आरएमसी एम-40 द्वारा पुनर्वास, सीवरेज लाइन, बरसाती नाला एवं फुटपाथ के निर्माण कार्य तथा साउथ सिटी-2 में मौजूदा सड़कों का बीएम एवं बीसी तकनीक से पुनर्वास कार्य शामिल है। इन विकास परियोजनाओं से क्षेत्र में सड़क कनेक्टिविटी बेहतर होने के साथ-साथ नागरिकों को सुगम आवागमन, बेहतर जल निकासी और आधुनिक शहरी सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

शांतिपूर्ण धरना-प्रदर्शन लोकतांत्रिक अधिकार, कांग्रेस कार्यकर्ताओं को रोककर आंदोलन की आवाज नहीं दबा सकती सरकार-राव नरेंद्र सिंह

चंडीगढ़। कांग्रेस के राष्ट्रव्यापी 'वोट बचाओ देश बचाओ' अभियान के तहत कांग्रेस और उसके सहयोगी राजनीतिक दलों के नेता एकजुट होकर लोकतंत्र, संविधान और नागरिकों के मताधिकार की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इस आंदोलन के दौरान प्रदर्शनकारी कांग्रेस नेताओं के साथ पुलिस के कथित दुर्व्यवहार और सख्ती की खबरें बेहद चिंताजनक हैं। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी और केसी वेणुगोपाल सहित पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के साथ पुलिस के व्यवहार पर भी सवाल उठ रहे हैं। कांग्रेस नेताओं ने स्पष्ट किया कि ऐसी कार्रवाई से आंदोलन रुकने वाला नहीं है, बल्कि सड़कों पर चल रहा यह संघर्ष आने वाले समय में पूरे देश में एक व्यापक जन आंदोलन का रूप लेगा। हरियाणा कांग्रेस के प्रभारी संजय दत्त और प्रदेश अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह ने आंदोलन की गंभीरता को देखते हुए संयुक्त रूप से पत्रकार वार्ता को संबोधित किया और पत्रकारों के साथ पूरे घटनाक्रम पर विस्तार से चर्चा की। इस* दौरान

उन्होंने लोकतंत्र, संविधान और मताधिकार की रक्षा के लिए कांग्रेस की प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा कि शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शन को रोकने के बजाय सरकार को उठाए जा रहे सवालों का जवाब देना चाहिए। हरियाणा कांग्रेस के प्रभारी संजय दत्त ने कहा कि कांग्रेस का 'वोट बचाओ देश बचाओ' अभियान केवल किसी राजनीतिक दल का आंदोलन नहीं, बल्कि देश के लोकतंत्र, संविधान और प्रत्येक नागरिक के मताधिकार की रक्षा की लड़ाई है। जब विपक्ष जनता के अधिकारों और लोकतांत्रिक संस्थाओं से जुड़े गंभीर सवाल उठा रहा है, तब सरकार की जिम्मेदारी है कि वह उन सवालों का जवाब दे। शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे नेताओं और कार्यकर्ताओं के खिलाफ पुलिस कार्रवाई करना लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप नहीं है। संजय दत्त ने कहा कि लोकतंत्र में विपक्ष की आवाज को दबाने के बजाय उसे सुना जाना चाहिए। शांतिपूर्ण तरीके से विरोध दर्ज कराना लोकतांत्रिक व्यवस्था का अभिन्न हिस्सा है और किसी भी सरकार को असहमति के स्वर से घबराना नहीं चाहिए। कांग्रेस का उद्देश्य देश के लोकतांत्रिक ढांचे की रक्षा करना और प्रत्येक नागरिक के मताधिकार को सुरक्षित रखना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कांग्रेस और उसके सहयोगी दल एकजुट होकर संघर्ष कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि 10 अक्टूबर को हरियाणा से बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता दिल्ली पहुंचकर आंदोलनरत कांग्रेस और सहयोगी दलों के नेताओं एवं कार्यकर्ताओं को अपना समर्थन देंगे। हरियाणा के कांग्रेस कार्यकर्ताओं में इस अभियान को लेकर भारी उत्साह है। सरकार चाहे जितनी भी बाधाएं खड़ी कर ले, कांग्रेस लोकतंत्र और संविधान की रक्षा के लिए अपनी आवाज बुलंद करती रहेगी।

विजय ने नोबेल शांति पुरस्कार जीतने पर नवनेथम पिल्लई को दी बधाई

चेन्नइ। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री सी जोसेफ विजय ने शुक्रवार को तमिल मूल की दक्षिण अफ्रीकी विधिवेत्ता नवनेथम पिल्लई को 2026 का नोबेल शांति पुरस्कार दिए जाने पर बधाई दी। यह पुरस्कार शांति, मानवाधिकारों और अंतरराष्ट्रीय कानून को बढ़ावा देने के लिए उनके जीवन भर किए गए कार्यों के सम्मान में दिया गया है। विजय ने कहा कि मैं मानवाधिकारों, विश्व शांति और न्याय के लिए अंतरराष्ट्रीय मंच पर लगातार आवाज उठाने वाली तथा दक्षिण अफ्रीका में रहने वाली तमिल मूल की नवनेथम पिल्लई को 2026 के नोबेल शांति पुरस्कार के लिए चुने जाने पर हार्दिक बधाई देता हूं। विजय ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि यह दुनिया भर के तमिल लोगों के लिए अपार खुशी और गर्व की बात है। मानवाधिकारों, समानता, न्याय और विश्व शांति के उच्च आदर्शों के लिए अथक प्रयास करने वाली नवनेथम पिल्लई को एक बार फिर मेरी बधाई। बता दें कि भारतीय मूल की दक्षिण अफ्रीकी विधिवेत्ता नवनेथम 'नवी' पिल्लई को नोबेल शांति पुरस्कार देने की शुक्रवार को घोषणा की गई। संयुक्त राष्ट्र की पूर्व मानवाधिकार प्रमुख और अंतरराष्ट्रीय अदालत की न्यायाधीश पिल्लई को यह पुरस्कार शांति एवं अंतरराष्ट्रीय कानून को बढ़ावा देने में उनके योगदान के लिए प्रदान करने की घोषणा की गई है। तेईस सितंबर, 1941 को डरबन में तमिल मूल के भारतीय माता-पिता के घर जन्मीं पिल्लई का बचपन रंगभेद के दौर में बीता। उन्होंने आगे चलकर रंगभेद विरोधी कार्यकर्ताओं का बचाव करने तथा मानवाधिकारों और समानता को बढ़ावा देने के क्षेत्र में अपना करियर बनाया। वह 1967 में दक्षिण अफ्रीका के नेटाल प्रांत में वकालत शुरू करने वाली पहली महिला बनीं। बाद में वह दक्षिण अफ्रीका के उच्च न्यायालय में न्यायाधीश बनने वाली पहली अश्वेत महिला बनीं। उन्होंने रवांडा के लिए अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायाधिकरण में न्यायाधीश और अध्यक्ष के रूप में भी सेवाएं दीं। इसके अलावा, वह अंतरराष्ट्रीय आपराधिक अदालत की न्यायाधीश और 2008 से 2014 तक संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकार उच्चायुक्त भी रहीं।

उत्तर पश्चिम रेलवे द्वारा जीएसटी एवं आईटीसी की सही फ्लैगिंग पर क्षमता संवर्धन संगोष्ठी आयोजित

उमेश तिवारी

उत्तर पश्चिम रेलवे द्वारा दिनांक 09 अक्टूबर 2026 को उत्तर पश्चिम रेलवे मुख्यालय, जयपुर स्थित सभागार में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) विषय पर एक वर्चुअल संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री अमित सुदर्शन के अनुसार श्री बत्ती लाल मीना, मुख्य वित्त सलाहकार, उत्तर पश्चिम रेलवे के मार्गदर्शन में हुई संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य जीएसटी प्रावधानों की समझ को सुदृढ़ करना, इनपुट टैक्स क्रेडिट (आईटीसी) का लाभ प्राप्त करने हेतु लेन-देन की सही फ्लैगिंग सुनिश्चित करना तथा रेलवे बोर्ड के निर्देशों के अनुरूप पात्र जीएसटी लाभों का अधिकतम उपयोग करना था। इस संगोष्ठी का आयोजन क्षमता संवर्धन की पहल के अंतर्गत किया गया ताकि उत्तर पश्चिम रेलवे की विभिन्न लेखा इकाइयों में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बिलों के प्रसंस्करण के दौरान लेन-देन की सटीक फ्लैगिंग के महत्व के प्रति जागरूक किया जा सके। सही फ्लैगिंग पात्र आईटीसी का उचित लाभ

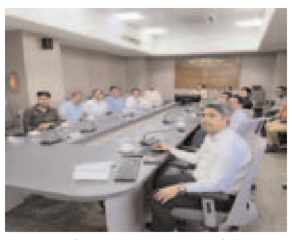

प्राप्त करने, अनुमन्य कर क्रेडिट के नुकसान को रोकने तथा जीएसटी संबंधी प्रावधानों के अनुपालन को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों को श्री विष्णु बजाज, वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखाधिकारी/बी एंड बी, रेलवे के कई लेखा अधिकारियों तथा उत्तर पश्चिम रेलवे के चार्टर्ड अकाउंटेंट एवं जीएसटी सलाहकार श्री एम.बी. माहेश्वरी ने संबोधित किया। वक्ताओं ने बिलों के प्रसंस्करण के दौरान लेन-देन की सही पहचान एवं फ्लैगिंग के महत्व पर प्रकाश डाला। साथ ही विभिन्न लेखा इकाइयों में जीएसटी प्रावधानों के एकरूप एवं प्रभावी अनुपालन हेतु जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया। वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से आयोजित इस संगोष्ठी में लगभग 50 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। इसमें उत्तर पश्चिम रेलवे की विभिन्न लेखा इकाइयों के प्रमुखों सहित अन्य संबंधित कार्मिक शामिल हुए। विभिन्न मंडलों एवं इकाइयों द्वारा जीएसटी संबंधी विषयों तथा लेन-देन की फ्लैगिंग के संबंध में उठाए गए प्रश्नों का वित्त अधिकारियों एवं जीएसटी सलाहकार द्वारा समाधान किया गया। इससे दैनिक बिल प्रसंस्करण के दौरान सामने आने वाली व्यावहारिक समस्याओं के निराकरण में सहायता मिली। यह पहल उत्तर पश्चिम रेलवे की क्षमता निर्माण, वित्तीय प्रक्रियाओं में सुधार तथा पात्र आईटीसी के प्रभावी उपयोग के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाती है। लेखा कार्मिकों के तकनीकी ज्ञान में वृद्धि एवं जीएसटी संबंधी प्रक्रियाओं में एकरूपता को बढ़ावा देकर इस कार्यक्रम का उद्देश्य बिल प्रसंस्करण की सटीकता में सुधार करना कर अनुपालन को सुदृढ़ बनाना तथा लागू नियमों एवं रेलवे बोर्ड के निर्देशों के अंतर्गत अनुमन्य सीमा तक पात्र आईटीसी का अधिकतम लाभ सुनिश्चित करना है।

उत्तर प्रदेश में राज्यसभा चुनाव के नतीजे घोषित, बीजेपी के आठ और सपा के दो सांसद जीते

नई दिल्ली। बीजेपी ने राज्यसभा के लिए प्रदेश सरकार के मंत्री धर्मपाल सिंह (लोध), पार्टी के पिछड़ा वर्ग मोर्चा के अध्यक्ष प्रकाश पाल (पाल), श्रुति गंगवार (कुर्मी), विद्यासागर सोनकर, प्रियंका रावत (दलित), राधाकांत ओझा, गोपी कृष्ण पांडेय (ब्राह्मण) और राम प्रताप सिंह चौहान (ठाकुर) को उम्मीदवार बनाया था। बीजेपी के आठ उम्मीदवारों में दो महिलाएं हैं और पार्टी ने अन्य पिछड़ा वर्ग, दलित, ब्राह्मण तथा ठाकुर समुदायों को प्रतिनिधित्व दिया है। उम्मीदवारों के चयन को वर्ष 2027 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के मद्देनजर भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। भाजपा उम्मीदवारों ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक तथा प्रदेश भाजपा अध्यक्ष पंकज चौधरी की मौजूदगी में नामांकन दाखिल किया था। बीजेपी ने इस बार केंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी और बीएल वर्मा को दोबारा उम्मीदवार नहीं बनाया था। सपा की ओर से पार्टी के वरिष्ठ नेता राम गोपाल यादव और रिलायंस इंडस्ट्रीज के कार्यकारी धनराज परिमल नाथवानी उम्मीदवार थे। दोनों को ही जीत मिली है। सपा की ओर से तीसरा उम्मीदवार उतारकर 10वीं सीट के लिए मुकाबला कराने की अटकलें भी थीं। हालांकि, सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने इन अटकलों पर विराम लगाते हुए कहा था, अब हमारा फोकस तीन पर नहीं, 403 पर है। उत्तर प्रदेश में सभी 10 सीटों पर चुनाव होने की स्थिति में किसी उम्मीदवार को एक सीट जीतने के लिए पहली वरीयता के कम से कम 37 मतों की जरूरत होती है। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार को हटाने की मांग को लेकर INDIA गठबंधन के सांसदों ने मंगलवार को दिल्ली में संसद से चुनाव आयोग मुख्यालय तक मार्च निकाला। इसी दौरान समाजवादी पार्टी की सांसद जया बच्चन ने बीजेपी और उसके प्रवक्ता संबित पात्रा के बयान पर तंज कसा।

कृषि विभाग ने हाड़ी की फसलों संबंधी जानकारी देने के लिए लगाया जिला स्तरीय किसान प्रशिक्षण कैम्प

करतारपुर। किसानों को हाड़ी 2026-27 की फसलों और धान की पराली के सुचारू प्रबंधन संबंधी तकनीकी जानकारी देने के लिए कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा आत्मा योजना के अंतर्गत जिला स्तरीय किसान प्रशिक्षण कैम्प का आयोजन किया गया। कैम्प के दौरान मुख्य अतिथि के तौर पर पहुंचे क्षेत्र के विधायक बलकार सिंह ने किसानों को धान की पराली को जलाने के बजाय उसका सुचारू प्रबंधन करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि पराली में आग लगाने से जहां पर्यावरण प्रदूषित होता है, वहीं भूमि की उर्वरा शक्ति का भी नुकसान होता है। उन्होंने किसानों से अपील की कि सरकार द्वारा सब्सिडी पर उपलब्ध कराई जाने वाली कृषि मशीनरी से फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करके पर्यावरण संरक्षण में योगदान

दें। उन्होंने मुख्यमंत्री श्री भगवंत सिंह मान के नेतृत्व वाली पंजाब सरकार द्वारा कृषि क्षेत्र के विकास और किसानों के कल्याण की प्रतिबद्धता को भी दोहराया। इस अवसर पर उन्होंने किसानों से कृषि व्यवसाय को लाभदायक बनाने के लिए कृषि विभाग के विशेषज्ञों द्वारा अनुशंसित बीज, खाद और दवाओं का ही उपयोग करने को कहा। एस्टेट अधिकारी, पुड्डा नवदीप सिंह ने भी पराली के सुचारू प्रबंधन पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पराली में आग लगाने से पृथ्वी की ऊपरी परत में मौजूद मित्र कीड़े तथा भूमि में मौजूद तत्व जैसे नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, सल्फर और जैविक पदार्थ नष्ट हो जाते हैं, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति कम हो जाती है। संयुक्त निदेशक कृषि इंजीनियर जगदीश सिंह ने कहा कि पंजाब में किसानों द्वारा पराली जलाने को रोकने के लिए सी.आर.एम. योजना के अंतर्गत वर्ष 2026-27 के दौरान विभिन्न मशीनरी सब्सिडी पर देने के लिए ऑनलाइन पोर्टल पर आवेदन मांगे गए थे। 930 मशीनों की सब्सिडी 15.75 करोड़ रुपये की राशि किसानों के खातों में डी.बी.टी. के माध्यम से ट्रांसफर की गई है। मुख्य कृषि अधिकारी डा. रणधीर सिंह ठाकुर ने जिले भर से आए किसानों को संबोधित करते हुए सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए विभाग से निरंतर संपर्क बनाए रखने की अपील की। उन्होंने बताया कि साउणी सीजन-2026 के दौरान मक्का के अंतर्गत 1350 हेक्टेयर क्षेत्र धान के अंतर्गत से लाया गया है और इन किसानों को 17,000 रुपये प्रति हेक्टेयर की राशि भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि डी.एस.आर. योजना वर्ष 2026-27 के दौरान जिले में 1971.45 एकड़ क्षेत्र में धान की सीधी बुवाई की गई है। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र नूरमहल से पहुंचे विशेषज्ञों द्वारा हाड़ी की फसलों की खेती, कीड़े-मकोड़े और बीमारियों के बारे में तकनीकी जानकारी दी गई। कैम्प में कृषि, बागवानी, पशुपालन, जल एवं भूमि संरक्षण विभाग के अधिकारियों के अलावा विभिन्न ब्लॉकों के 1500 से अधिक किसानों ने भाग लिया। कैम्प के दौरान किसानों द्वारा अपनी उपज के स्टॉल भी लगाए गए।

रेजीनगर में तो मुस्लिमों ने भी दे दिए भाजपा को वोट, ममता की टीएमसी और कांग्रेस की जमानत जब्त

कोलकाता। दिल्ली के जंतर-मंतर पर कुछ महीने पहले कॉकरोच जनता पार्टी (CJP) ने एक बड़ा आंदोलन किया था। इसके कारण तत्कालीन शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को इस्तीफा देना पड़ गया था। इस आंदोलन ने विपक्ष को एक उम्मीद दी। इसके बाद पूरे देश में विभिन्न मुद्दों पर केंद्र सरकार की घेरने की कोशिश की गई। इस बीच एक अंग्रेजी अखबार के द्वारा चुनाव आयोग के खिलाफ छापी गई एक रिपोर्ट ने विपक्ष को और बल दिया। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के साथ-साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस्तीफे तक की मांग होने लगी। हालांकि, इन तमाम विरोधों का असर चुनावी राजनीति पर देखने को नहीं मिल रहा है। मुस्लिम बहुल सीट पर संघर्ष करने वाली भाजपा ने रेजीनगर उपचुनाव में शानदार जीत हासिल कर ली है। पश्चिम बंगाल में दो सीटों पर उपचुनाव हुए थे। एक नंदीग्राम और दूसरा रेजीनगर। नंदीग्राम में भाजपा की जीत प्रत्याशित थी, लेकिन रेजीनगर के नतीजे ने सभी को चौंका दिया है। ऐसा इसलिए क्योंकि यहां मुस्लिम वोट बैंक का दबदबा है। भाजपा के लिए यह सियासी तौर पर अछूत माना जाता था। उपचुनाव के नतीजों से तो साफ पता चल रहा है कि इस चुनाव में मुस्लिमों ने भी भाजपा को वोट दिए हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि इस सीट पर करीब 70 प्रतिशत मुस्लिम मतादाता हैं और भाजपा ने यहां 75748 मतों से उचुनाव जीतकर इतिहास रच दिया है। भाजपा कैंडिडेट को यहां 129914 वोट मिले। विधानसभा चुनाव के दौरान करीब इतने ही वोट हुमायूं कबीर को मिले था। इस उपचुनाव में उनकी जगह उनके बेटे चुनाव लड़ रहे थे। उन्हें 54098 मतों से ही संतोष करना पड़ा। कांग्रेस कैंडिडेट यहां 6168 मतों के साथ तीसरे नंबर पर रहे। वहीं, ममता बनर्जी की टीएमसी को सिर्फ 3847 वोट मिले। इस जीत पर जब मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी की प्रतिक्रिया जानने की कोशिश की गई तो उन्होंने कहा, 'हमने अल्पसंख्यकों से दोस्की की है।

संपादकीय

(उमेश कुमार तिवारी)

भोजन में लोकतांत्रिक हो रहा समाज

समाज में मूल्यों के स्तर पर परिवर्तन इतनी धीमी गति से होते हैं कि कई बार उनको पकड़ पाना बहुत मुश्किल होता है। धर्म, राज्य, सुशासन और विवाह ऐसी ही कुछ संस्थाएं हैं, जो मनुष्य की संज्ञानात्मक क्षमताओं में वृद्धि के साथ इस कदर बदली हैं कि कुछ शताब्दी पहले के हमारे पूर्वज आज इस धरा पर वापस आएं, तो पहचान भी नहीं पाएंगे। श्रृंखला परिवर्तन या 'डॉमिनो इफेक्ट' में तब्दील होकर ये बदलाव इतनी तेज भी हो सकते हैं कि हमारे कदमों के नीचे की जमीन कांपती सी महसूस हो। पिछले कुछ दिनों से मेरी नजर ऐसे ही एक परिवर्तन पर टिकी हुई है, जो हमारी खान-पान की आदतों से जुड़ा है। बिना इस खामखयाली के कि मैं समाजशास्त्र का कोई गंभीर अध्येता हूं, अपने समय और समाज के एक सामान्य, किंतु सजग अवलोकनकर्ता की हैसियत से कुछ घट रहे की तरफ आपका और समाजशास्त्रियों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। मैं जिस तरफ इशारा कर रहा हूं, वह भारतीय समाज की खान-पान की आदतों से जुड़ा है। दो-तीन साल पहले मुझे पूर्वी उत्तर प्रदेश के अपने गांव में बरसों बाद होली के मौके पर रुकने का मौका मिला। मैं यह जानकर चकरा गया कि बगल के बाजार में आधी रात के बाद से ही बकरे कटने शुरू हो गए और यह सिलसिला भोर तक चलता रहा। मेरी पारंपरिक समझ यह थी कि वर्ण-व्यवस्था की जकड़बंदियों वाले इस गांव की ज्यादातर जातियां शाकाहारी थीं। खास तौर से भूमिहार और यादव। सीढ़ी के निचले पायदानों पर खड़ी जातियों में भी कंठी लेने जैसी परंपराएं थीं, जिनके अंतर्गत लोग मांसाहार छोड़कर शाकाहारी हो जाते थे। दरअसल, भोजन की आदतें एक खास तरह की शुचिता और नैतिकता बोध का एहसास कराती थीं। ऐसे में, बड़ी संख्या में परिवारों की अपनी भोजन संबंधी आदतों में बदलाव मेरे लिए एक महत्वपूर्ण सूचना थी। मैंने ग्रामीणों से बात करनी शुरू की, तो समझ में आया कि कुछ ही दशकों में थाली में अन्न की उपलब्धता और उसकी विविधता में जबरदस्त परिवर्तन हुए हैं। बचपन का सुना एक मुहावरा कि 'फलां घर में दोनों वक्त चूल्हा जलता है', अब नहीं सुनाई देता, कारण अब ऐसा परिवार बड़ी कोशिश करके भी नहीं मिलेगा, जिसे दोनों वक्त अन्न न नसीब होता हो। यह अलग विषय है कि भोजन में शाक-सब्जी, फल, अंडे या दूध-दही अभी भी बड़ी संख्या में परिवारों के लिए विलासिता जैसा ही है। अभी भी दूध आम तौर पर बेटों को पिलाया जाता है, बेटियों को बचने पर ही मिलता है। सबसे बड़ा परिवर्तन यह हुआ है कि अधिकांश परिवारों के मन से मांसाहार को लेकर वर्जनाएं खत्म हो गई हैं। अपवाद स्वरूप ही पुरानी पीढ़ी के कुछ लोग सख्ती से इसे अपनी व्यंजन-सूची से बाहर रखे हुए हैं, पर ज्यादातर ने मान लिया है कि वे अपनी नई पीढ़ी पर भोजन की आदतों के संबंध में दबाव नहीं डाल सकते। शाम होने पर बाजार गया। होली के बावजूद काफी दुकानें खुली हुई थीं। ताजा सब्जियां और मछलियां बिक रही थीं। दाम कमोबेश वही थे, जो राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में दिखते हैं। याद आया, बचपन में जब हम गांव पहुंचते थे, तब अगर साप्ताहिक बाजार का दिन होता, तो हरी सब्जी खाने में होतीं, नहीं तो आलू-प्याज से काम चलता। इस परिवर्तन में सड़कों के विस्तार और ट्रांसपोर्ट क्रांति का योगदान तो है ही, बाजार द्वारा उन मूल्यों को नष्ट करने की भी अहम भूमिका है, जिनके तहत बहुत सी जातियों के लोग हरी सब्जी या दूध बेचना अपमानजनक समझते थे। बातचीत के दौरान पता चला कि पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे से सब्जियां ट्रकों में भरकर दिल्ली की मंडियों तक भेजी जा रही हैं। मुझे कुछ ही साल पहले की याद आई, जब अंडे, मुर्गे या बर्फ में ढकी मछलियां हैदराबाद से स्थानीय बाजारों में आती थीं। पता चला कि अब स्थिति बदल गई है। परातों में पानी भरकर जो जिंदा मछलियां बेची जा रही हैं, वे स्थानीय उत्पादन हैं। गांवों में जिन जातियों के लोगों ने पोल्ट्री फॉर्म खोले हैं, उनके एक-दो पीढ़ी पहले के पूर्वज तो इस व्यवसाय की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। रोटी और बेटी से जुड़े मूल्यों को आधार मानने वाली वर्ण-व्यवस्था पर बाजार ने जबरदस्त प्रहार किया है। इनके चलते साथ बैठकर खाने का निषेध लगभग खत्म कर दिया है। एक अर्थ में कह सकते हैं कि भोजन की आदतों में बदलाव लोकतंत्र को मजबूत कर रहा है। अध्ययन के इसी क्रम में मुझे उस सच से साक्षात्कार हुआ, जिसे पढ़कर बहुत से पाठक चकरा जाएंगे। मुझे कांखभार बाजार में सड़क से हटकर एक होटल पर मनोरंजक वर्तनी के साथ 'पीग के मीट की दुकान' लिखी दिखाई दी। पता चला, एक उल्लेखनीय प्रतिशत ने, जिनमें हरेक जाति के लोग शामिल हैं, 'पोर्क' खाने के परहेज से मुक्ति पा ली है। हालांकि, अभी यह शुरुआती स्थिति है, जिसमें कुछ जातियों के लोग छिप-छिपाकर खरीद रहे हैं, घर के बाहर या अलग बर्तनों में पका रहे हैं। पोर्क के साथ आज वही स्थिति है, जो कुछ दशकों पूर्व दूसरे मांसाहार के साथ थी। मैंने गूगल पर जाकर तलाशा, तो जानकारी मिली कि अगल-बगल में तमाम 'पोर्क फार्म' खुल गए हैं, जिन्हें तथाकथित अगड़ी जातियों के लोग चला रहे थे। व्यावसायिक रूप से यह जबरदस्त मुनाफे का धंधा बन गया है। भारत के विविध समाजों में खान-पान की आदतों को लेकर कई बार हमारी समझ वास्तविकता से कितनी दूर हो सकती है, इसका एक मनोरंजक उदाहरण हाल में देखने को मिला। एक धर्मगुरु ने नवरात्रि के दौरान पश्चिम बंगाल में मांस-मछली की बिक्री पर प्रतिबंध लगाने की बात की, तो बंगाली समाज उबल पड़ा। बिना 'माछ' वहां देवी के प्रसाद की कल्पना कैसे की जा सकती है?

चीन-पाकिस्तान रक्षा गठजोड़ और भारत की रणनीतिक विवशता

दक्षिण एशिया के भू-राजनीतिक परिदृश्य में शक्ति संतुलन तेजी से करवट बदल रहा है। पिछले कुछ समय में चीन और पाकिस्तान के बीच रक्षा और सामरिक सहयोग जिस आक्रामकता के साथ आगे बढ़ा है, उसने नई दिल्ली के सुरक्षा गलियारों में खतरे की घंटी बजा दी है। हाल ही में चीन द्वारा पाकिस्तान को पांचवीं पीढ़ी के अत्याधुनिक स्टेल्थ लड़ाकू विमान, विशेष रूप से जे-35 और जे-31 की आपूर्ति करने की खबरें और पाकिस्तानी पायलटों की चीनी वायुसेना के साथ बढ़ती संयुक्त ट्रेनिंग महज एक द्विपक्षीय सैन्य सौदा नहीं है। यह भारत की संप्रभुता, हवाई श्रेष्ठता और दीर्घकालिक सुरक्षा के लिए एक सीधी और गंभीर चुनौती है। भारतीय वायुसेना के नेतृत्व ने भी इस उभरते खतरे को खुले तौर पर स्वीकार किया है। आज भारत के सामने सबसे बड़ा यक्ष प्रश्न यह है कि वह एक तरफ घटती हुई लड़ाकू विमानों की स्क्वाड्रन क्षमता और दूसरी तरफ टू-फ्रंट वॉर (दो मोर्चों पर युद्ध) की वास्तविक होती आशंका के बीच अपनी सैन्य संप्रभुता को कैसे अक्षुण्ण बनाए रखे। यह संपादकीय इस रक्षा सौदे के गहरे रणनीतिक निहितार्थों, भारत की वर्तमान वायुसैनिक कमजोरियों और इस चक्रव्यूह से बाहर निकलने के व्यावहारिक रास्तों का एक विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। ऐतिहासिक रूप से, भारत ने पारंपरिक सैन्य मोर्चे पर हमेशा पाकिस्तान के खिलाफ एक गुणात्मक और संख्यात्मक बढ़त बनाए रखी है। 1965, 1971 और 1999 के युद्धों में भारतीय वायुसेना की तकनीकी और रणनीतिक श्रेष्ठता ने निर्णयकारी भूमिका निभाई थी। यहाँ तक कि हाल के वर्षों में फ्रांस से मिले 4.5 पीढ़ी के राफेल विमानों ने पाकिस्तान की वायुसेना के अमेरिकी एफ-16 विमानों पर भारत को एक स्पष्ट मनोवैज्ञानिक और तकनीकी बढ़त दे दी थी। लेकिन चीन द्वारा पाकिस्तान को पांचवीं पीढ़ी के फाइटर जेट सौंपने की यह नई डील इस स्थापित संतुलन को पूरी तरह से बिगाड़ने की क्षमता रखती है। पांचवीं पीढ़ी के विमानों की सबसे बड़ी खासियत उनका स्टेल्थ होना होता है, यानी वे दुश्मन के रडार की नजरों से बचकर बेहद करीब तक हमला करने में सक्षम होते हैं। यदि पाकिस्तान इन विमानों को अपनी वायुसेना में सफलतापूर्वक शामिल और संचालित कर लेता है, तो भारत की मौजूदा हवाई रक्षा प्रणालियों और राफेल जैसे 4.5 पीढ़ी के विमानों की प्रभावशीलता पर एक गंभीर प्रश्नचिह्न लग जाएगा। चीन इस सौदे के जरिए न केवल भारत को अपने पड़ोस में उलझाए रखना चाहता है, बल्कि वह भारतीय उपमहाद्वीप में अमेरिकी प्रभाव और भारत की बढ़ती वैश्विक महत्वाकांक्षाओं को भी सीमित करना चाहता है। यह सौदा साफ तौर पर दर्शाता है कि पाकिस्तान अब चीनी सेना के एक प्रॉक्सी के रूप में काम कर रहा है, जिसका एकमात्र उद्देश्य भारत की सैन्य ऊर्जा को निरंतर सोखना है। इस बाहरी खतरे के बीच, भारत की सबसे बड़ी चिंता उसकी आंतरिक रक्षा तैयारियों की धीमी रफ्तार है। भारतीय वायुसेना को किसी भी दोहरे मोर्चे (चीन और पाकिस्तान) की चुनौती से निपटने के लिए कम से कम 42 लड़ाकू विमानों की स्क्वाड्रन की आवश्यकता स्वीकृत है। इसके विपरीत, वर्तमान में यह संख्या खतरनाक रूप से घटकर महज 29 स्क्वाड्रन पर आ गई है। मिग-21 जैसे पुराने सोवियत कालीन विमानों के चरणबद्ध तरीके से बाहर होने और नए विमानों के शामिल होने की बेहद धीमी दर ने इस खाई को और चौड़ा कर दिया है। इस संकट को और गहरा करने में हमारे स्वदेशी रक्षा उत्पादन की कछुआ चाल ने बड़ी भूमिका निभाई है। हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड द्वारा विकसित किए जा रहे तेजस मार्क-1ए लड़ाकू विमानों की डिलीवरी में लगातार हो रही देरी ने वायुसेना के आधुनिकीकरण के पहियों को जाम कर दिया है। स्वदेशीकरण और आत्मनिर्भर भारत का नारा अपनी जगह बेहद सराहनीय और आवश्यक है, लेकिन जब वास्तविक युद्ध की रणनीतियों की बात आती है, तो नारों से ज्यादा जमीन पर विमानों की उपलब्धता मायने रखती है। भारत अपने लड़ाकू विमानों की संख्या को बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रहा है, जबकि उसके दोनों पड़ोसी देश अपनी फ्लीट को न केवल आधुनिक बना रहे हैं, बल्कि उनकी संख्या में भी भारी इजाफा कर रहे हैं। वायुसेना प्रमुख के अनुसार, यदि भारत को अपनी खोई हुई हवाई श्रेष्ठता वापस पानी है, तो उसे हर साल अपनी फ्लीट में कम से कम 36 से 40 नए फाइटर जेट शामिल करने होंगे, जो कि वर्तमान उत्पादन क्षमता को देखते हुए एक बेहद कठिन लक्ष्य प्रतीत होता है। हालांकि स्थिति चिंताजनक है, लेकिन सैन्य विशेषज्ञों का मानना है कि भारत को तुरंत किसी घबराहट या पैनिक में आने की आवश्यकता नहीं है। किसी भी लड़ाकू विमान की क्षमता महज उसकी कागजी विशिष्टताओं या उसकी पीढ़ी से तय नहीं होती। युद्ध में सबसे महत्वपूर्ण होता है सिस्टम इंटीग्रेशन । पाकिस्तान को चीन से विमान तो मिल सकते हैं, लेकिन उन्हें अपने मौजूदा पश्चिमी और चीनी रडार नेटवर्क, मिसाइल प्रणालियों और कमांड-एंड-कंट्रोल इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ पूरी तरह से एकीकृत करने में वर्षों का समय लगेगा। चीनी तकनीक की विश्वसनीयता और वास्तविक युद्ध स्थितियों में उसका प्रदर्शन हमेशा से संदेह के घेरे में रहा है। इसके अतिरिक्त, वायु रक्षा केवल लड़ाकू विमानों के भरोसे नहीं लड़ी जाती। भारत ने हाल के वर्षों में अपनी जमीन से हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणालियों को बेहद मजबूत किया है। रूस से मिली एस-400 ट्रिम्फ वायु रक्षा प्रणाली और भारत के अपने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन तथा भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (द्वारा विकसित किए जा रहे आधुनिक एंटी-स्टेल्थ रडार नेटवर्क इस खतरे को काफी हद तक कम कर सकते हैं। एंटी-स्टेल्थ रडार कम तरंग दैर्ध्य का उपयोग करके स्टेल्थ विमानों की अदृश्यता को बेअसर करने की क्षमता रखते हैं। इसलिए, चीनी विमानों का पाकिस्तान की फ्लीट में आना भारत के लिए चुनौती जरूर है, लेकिन यह कोई ऐसी अभेद्य दीवार नहीं है जिसे तोड़ा न जा सके। इस सामरिक गतिरोध को तोड़ने के लिए भारत को एक बहुआयामी और त्वरित रणनीति पर काम करना होगा। पहली प्राथमिकता तात्कालिक आवश्यकताओं को पूरा करने की होनी चाहिए। भारत पिछले कई वर्षों से 114 मल्टी-रोल फाइटर एयरक्राफ्ट की खरीद प्रक्रिया को अटकाए हुए है। नौकरशाही की लालफीताशाही और बजटीय सीमाओं के कारण इस सौदे पर अंतिम निर्णय नहीं हो पाया है। वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए, भारत सरकार को इसी वित्तीय वर्ष के भीतर फ्रांस के साथ राफेल या किसी अन्य समकक्ष विमान के लिए MRFA डील को अंतिम रूप देना होगा। यह वायुसेना के घटते स्क्वाड्रन को तुरंत ऑक्सीजन देने जैसा होगा। दूसरी रणनीति दीर्घकालिक आत्मनिर्भरता की होनी चाहिए। भारत का अपना पांचवीं पीढ़ी का विमान कार्यक्रम, जिसे एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट कहा जाता है, अभी भी डिजाइन और शुरुआती विकास के चरणों में है। सरकार को इस परियोजना को मिशन मोड में डालना होगा और निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देकर इसकी समयसीमा को आधा करना होगा। लेकिन यदि स्ट के निर्माण में उम्मीद से ज्यादा देरी होती है, तो भारत को व्यावहारिक रुख अपनाते हुए विदेशी विकल्पों को खुला रखना होगा। रूस द्वारा पेश किए गए सुखोई-57 स्टेल्थ फाइटर के प्रस्ताव या अमेरिका के अत्याधुनिक विमानों की तकनीक हस्तांतरण की संभावनाओं पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय सुरक्षा के मामले में रणनीतिक जिद से ज्यादा व्यावहारिक निर्णय मायने रखते हैं। चीन-पाकिस्तान रक्षा सौदा भारतीय रक्षा योजनाकारों के लिए एक स्पष्ट और कड़ा वेक-अप कॉल है। अब वह समय बीत चुका है जब भारत अपने दुश्मनों पर केवल अपनी संख्या बल या पुराने युद्धों के अनुभवों के आधार पर बढ़त बनाए रख सकता था। आज का युद्ध तकनीक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, स्टेल्थ और इलेक्ट्रॉनिक विंग्स का है। यदि भारत को उपमहाद्वीप में एक शुद्ध सुरक्षा प्रदाता और एक वैश्विक महाशक्ति के रूप में अपनी स्थिति बनाए रखनी है, तो उसे अपनी रक्षा खरीद प्रक्रियाओं में क्रांतिकारी बदलाव करने होंगे ।घटती हुई स्क्वाड्रन संख्या और पड़ोसियों की बढ़ती ताकत के बीच का यह अंतर भारत को रक्षा खर्च बढ़ाने और त्वरित निर्णय लेने के लिए विवश करता है। हमें यह समझना होगा कि शांति की रक्षा केवल तभी की जा सकती है जब आप युद्ध के लिए पूरी तरह तैयार हों। चीन और पाकिस्तान की इस जुगलबंदी का जवाब देने के लिए भारत को आर्थिक, कूटनीतिक और सैन्य मोर्चे पर एक नए विज़न की आवश्यकता है। समय तेजी से निकल रहा है, और आसमान में अपनी संप्रभुता को बनाए रखने के लिए नई दिल्ली को अब कड़े, त्वरित और दूरगामी फैसले लेने ही होंगे।

डाटा सेंटर बनाते समय पानी बिजली का भी ध्यान रखें

इस साल जुलाई में ठाणे (मुंबई) के सैकड़ों निवासियों ने बालकुम स्थित 53 एकड़ के उस भूखंड पर मानव श्रृंखला बनाई, जिसे 'हाइपरस्केल डाटा सेंटर' के लिए चयनित किया गया था। निवासी उस शोर और गर्मी के खिलाफ अपना विरोध जता रहे थे, जो इस डाटा सेंटर के बनने से पैदा होने वाली थी। वे शहर में पहले से ही पानी की किल्लत झेल रहे थे, इसलिए वे इस डाटा सेंटर में पानी के भारी इस्तेमाल के खिलाफ भी मुखर थे। प्रदर्शनकारियों की आशंकाएं नई नहीं हैं। पिछले तीन साल से ये दावे किए जा रहे हैं कि 'चैटजीपीटी' से पूछे गए हर सवाल में आधा लीटर पानी और 'गूगल सर्च' के मुकाबले 10 गुना ज्यादा बिजली लगती है। हालांकि, इन दावों की सच्चाई पर सवाल उठाए गए हैं। पिछले साल अगस्त में गूगल ने बताया था कि 'जेमिनी' को दिए गए एक औसत 'टेक्स्ट प्रॉम्प्ट' में 0.24 वाट-प्रतिघंटा बिजली और 0.26 मिलीलीटर (लगभग पांच बूंद) पानी खर्च होता है, लेकिन गूगल ने इस बात को नजरअंदाज कर दिया कि रीजनिंग मॉडल सौ गुना और वीडियो जेनरेटर पांच सेकंड की क्लिप के लिए उस आंकड़े से लगभग 4,000 गुना ज्यादा बिजली खर्च करते हैं।

यहां जिस बात का बचाव करना बहुत मुश्किल है, वह है सर्वर को ठंडा रखने के लिए जरूरी पंखों की लगातार गूंज से होने वाला ध्वनि प्रदूषण। 'कौंसिल ऑन एनर्जी, एनवायर्नमेंट ऐंड वॉटर' के अनुसार, भारत में डाटा सेंटर में पानी की खपत हमारी कुल जरूरत का 0.02 प्रतिशत से 0.03 प्रतिशत तक ही है। इसका मतलब यह नहीं है कि ठाणे में विरोध करने वालों की चिंता निराधार है। एआई से पर्यावरण पर पड़ने वाले असर को मापने के लिए यह देखना जरूरी है कि डाटा सेंटर कहां बना है, उसे चलाने के लिए ऊर्जा के स्रोत क्या हैं और उसका असर किन लोगों पर पड़ेगा? आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम में गूगल का 15 अरब डॉलर का एआई हब ऐसी जगह पर बन रहा है, जहां का भूजल स्तर पहले ही बहुत नीचे है। वहीं, तथ्य यह भी है कि देश की आधी से ज्यादा डाटा सेंटर क्षमता वाली मुंबई में इस गर्मी में पानी की राशनिंग करनी पड़ी थी। देश के इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने पिछले साल जो 'नेशनल डाटा सेंटर पॉलिसी' का मसौदा जारी किया था, उसमें प्रोत्साहन (इंसेंटिव्स) को ली गई बिजली और उसके सर्वर द्वारा असल में इस्तेमाल की गई बिजली, यानी 'पावर-यूसेज इफेक्टिवनेस' के अनुपात से जोड़ा गया है। हालांकि, ऐसा लगता है कि इसमें पानी, जगह के चयन और शोर-शराबे से जुड़ी समस्याओं पर ध्यान नहीं दिया गया है। चूंकि 'पावर-यूसेज इफेक्टिवनेस' हासिल करने का सबसे सस्ता तरीका पानी के वाष्पीकरण से ठंडा करना (इवैपोरेटिव कूलिंग) है।

इसलिए हो सकता है कि बिजली बचत के चक्कर में हमें पानी की भारी कमी का सामना करना पड़े। एआई के क्षेत्र में सफल होने के लिए हमें उसी तरीके को अपनाना चाहिए, जिस पर हमारा आईटी उद्योग आधारित है, लेकिन यह हमारी जरूरत का सिर्फ आधा हिस्सा है। बाकी आधा हिस्सा बालकुम के निवासियों की चिंताओं को दूर करने से जुड़ा है। माइक्रोसॉफ्ट का हैदराबाद डाटा सेंटर एक 'क्लोज्ड-लूप सिस्टम' पर चलता है, जो कूलिंग के लिए पानी का इस्तेमाल नहीं करता है। हमें इन विधियों को देश के दूसरे हिस्से में भी लागू करना चाहिए। हमारी राष्ट्रीय नीति में इन चिंताओं का सीधे तौर पर समाधान होना चाहिए।

हर डाटा सेंटर को पानी-बिजली के इस्तेमाल की क्षमता (पीयूई) की रिपोर्ट देना जरूरी होना चाहिए। हर नए स्थल का परीक्षण होना चाहिए, जिसमें उसके बेसिन में पानी की उपलब्धता को आंका जाए। उन घरों को भी ध्यान में रखा जाए, जो उसी पानी पर निर्भर हैं। एआई द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले पानी की मात्रा के बारे में कहानियां बनी रहेंगी, क्योंकि यह मिथक असलियत से कहीं ज्यादा असरदार है, लेकिन बालकुम के निवासियों की तरह लोग असल में सिर्फ यह भरोसा चाहते हैं कि जो डाटा सेंटर बनाई जा रहा है, वह उन लोगों पर कोई असंभव बोझ न डाले, जिनको उसके साथ रहना है। ये ऐसी चिंताएं हैं, जिनका समाधान हमारी डाटा सेंटर पॉलिसी आसानी से कर सकती है।

एसआईआर पर हंगामा, हकीकत से ज्यादा फसाना

विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआईआर को लेकर सियासी पारा लगातार चढ़ा हुआ है। विशेषकर विपक्षी दल जिस तरह से इस पूरी प्रक्रिया पर सवाल उठा रहे हैं, उससे माहौल में एक भ्रम फैल रहा है। विपक्षी हंगामे और सवालों के चलते ऐसे लोगों की संख्या बढ़ी है, जो मानने लगे हैं कि मतदाता सूची की जांच एक तरह से नागरिकता की जांच हो गई है। लोग एक बारगी वोटर न होने को बर्दाशत कर भी लें, लेकिन कोई नहीं चाहेगा कि उसकी जन्मजात नागरिकता पर सवाल उठे या वह खतरे में पड़े। कहना न होगा कि विशेषकर पश्चिम बंगाल में हुए एसआईआर के बहाने विपक्ष यह भ्रम और डर-दोनों फैलाने में किंचित सफल रहा है। हालांकि यह भी सच है कि ऐसा भ्रम और डर सिर्फ पश्चिम बंगाल और बिहार के ही कुछ इलाकों में ही दिख रहा है। एसआईआर उत्तर प्रदेश में भी हुआ है और दिल्ली में भी जारी है। एसआईआर तमिलनाडु में भी हुआ है। लेकिन यहां के मतदाताओं के बीच ऐसा भ्रम और डर न के बराबर दिखा है। ऐसे में सवाल यह उठता है कि आखिर बिहार और पश्चिम बंगाल में ऐसा डर क्यों दिख रहा है? इसकी वजह है, वहां पिछले कुछ दशकों में बांग्लादेश से बढ़ी घुसपैठ। पश्चिम बंगाल में जब सत्ता में वाममोर्चा था, तब यही ममता बनर्जी वहां घुसपैठ के मुद्दे को उछालती रहती थीं और वाममोर्चे पर आरोप लगाती रहती थीं कि वह इसे बढ़ावा दे रहा है। ममता बनर्जी इस बहाने परोक्ष रूप से वाममोर्चा पर आरोप लगाती थीं कि मतदाता बने घुसपैठियों के ही सहारे वह पश्चिम बंगाल की सत्ता में काबिज है। बाद के दिनों में ये मतदाता ममता के समर्थक हो गए और ममता की सत्ता के आधार बनने लगे तो उन्हें भी यह मामला फिजूल का लगने लगा। बिहार का सीमांचल इलाका भी बांग्लादेशी घुसपैठ से प्रभावित रहा है। इसलिए वहां भी ऐसे सवाल और भ्रम उठ रहे हैं। चूंकि एसआईआर में ऐसे अवैध मतदाता ज्यादा सवालों के घेरे में हैं या फिर उनके नाम कट रहे हैं, इस वजह से इन्हीं राज्यों में यह मुद्दा कुछ ज्यादा तुर्श दिख रहा है। मतदाता सूची में सुधार और उसमें चुनाव आयोग एवं मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार की भूमिका पर भी बड़े सवाल उठे हैं। सवाल यह भी है कि क्या एसआईआर को लेकर उठाए जा रहे सवाल असल में प्रक्रियात्मक और कानूनी हैं या इनके जरिए सिर्फ राजनीति हो रही है? पहले ही कहा जा चुका है कि एसआईआर को लेकर विपक्षी दलों की सबसे ज्यादा आपत्तियां बिहार और पश्चिम बंगाल से जुड़ी बताई जा रही हैं। कुछ राजनेताओं और दलों ने एसआईआर के आधार पर इन राज्यों के चुनावी परिणामों और मतदाता सूची की प्रक्रिया पर सवाल उठाए हैं। यहां ध्यान रखने की बात है कि एसआईआर केरल और तमिलनाडु जैसे राज्यों में भी हुआ, लेकिन वहां बिहार या पश्चिम बंगाल की तरह इस पर सियासी विवाद नहीं हुआ। ऐसे में सवाल उठना लाजमी है कि यदि कुछ राज्यों में एसआईआर को लेकर गंभीर आपत्ति नहीं है तो फिर एक या दो राज्यों में गंभीर आपत्तियां क्या राजनीतिक एजेंडे की वजह से तो नहीं उठाई जा रहीं? एसआईआर को देखने और समझने की एक ही कसौटी हर राज्य में क्यों नहीं लागू की जा रही है? इससे तो यही संकेत जाता है कि इसका सियासी विरोध सेलेक्टिव है और दोहरे मापदंड से भरा हुआ है। एसआईआर को लेकर जारी बहस में बड़े पैमाने पर नाम हटाने, तकनीकी प्रणाली के इस्तेमाल और पारदर्शिता जैसे सवाल उठाए गए हैं। मतदाता सूची से नाम हटाने की प्रक्रिया निर्धारित कानूनी और प्रशासनिक चरणों के तहत होती है। नाम हटाने से पहले मतदाता को नोटिस जारी करने और उसकी आपत्तियों और तर्कों की सुनवाई की जाती है। इसके बाद आखिरी निर्णय संबंधित निर्वाचन अधिकारी के स्तर पर होता है। इसलिए ड्राफ्ट मतदाता सूची में किसी मतदाता का नाम नहीं होना और अंतिम मतदाता सूची से नाम हट जाना, एक ही बात नहीं है। इसलिए जरूरी है कि दावे, ड्राफ्ट आंकड़े, आपत्तियों और अंतिम निर्णय, इन सभी चरणों को अलग-अलग समझा जाए। हर स्तर पर चूंकि आयोग ने पारदर्शी व्यवस्था अपना रखी है, इसे समझना हो तो अभी दिल्ली के किसी बीएलओ केंद्र का दौरा किया जा सकता है। दिल्ली में खूब नोटिस जारी किए गए हैं, उनके जवाब में लोग बीएलओ यानी बूथ स्तर के अधिकारी के पास पहुंच रहे हैं। लेकिन अफरातफरी, घबराहट या दहशत नहीं दिख रही। बीएलओ लोगों से जरूरी फॉर्म और प्रमाण ले रहे हैं। ज्यादातर नोटिस की वजह पूरा नाम ना होना, नाम की वर्तनी गलत होना, पिता या पति के नाम का पूरा न होना या फिर उनके नाम की वर्तनी में गड़बड़ी या कमी होना है। अधिकारियों का कहना है कि ईसीआईनेट का सॉफ्टवेयर मतदाता सूची के पहले से जारी नाम और आवेदन में कुछ ही गड़बड़ी पाता है तो वह नोटिस जेनरेट कर देता है। उदाहरण के लिए, पहले से किसी का नाम मतदाता सूची में सिर्फ रमेश दर्ज है, जबकि उसका पूरा नाम रमेश शर्मा है, या इसी तरह उसके पिता का पूरा नाम दर्ज नहीं है। लेकिन पहचान के दूसरे दस्तावेजों में उसका पूरा नाम दर्ज है। जब आयोग के अधिकारी ईसीआईनेट पर इसे लोड करते हैं तो सॉफ्टवेयर इस गड़बड़ी या बेमेल तथ्य को पकड़ता है। इसी तरह किसी का पता बदल गया है, जो पहले से दर्ज रिकॉर्ड से अलग है तो उसे भी नोटिस जा रही है। बस इन्हें प्रमाणित करना भर है। लेकिन राजनीतिक दल इसे या तो समझ नहीं रहे या फिर जानबूझकर नासमझी दिखा रहे हैं। वैसे भी इन प्रमाणों को घुसपैठिए या अवैध मतदाता साबित नहीं कर पा रहे हैं। इसलिए उनके नाम कट रहे हैं या काटे जाने की संभावना बन रही है। एसआईआर, निर्वाचन आयोग और न्यायपालिका पर सवाल उठाना लोकतांत्रिक तो है, लेकिन आरोप और प्रमाण, ड्राफ्ट सूची और अंतिम सूची, याचिका और न्यायिक आदेश तथा राजनीतिक मांग और कानूनी कार्रवाई, के बीच समझदारी से अंतर बनाए रखना भी महत्वपूर्ण है। अव्वल तो मतदाता सूची की शुद्धता और चुनावी प्रक्रिया की विश्वसनीयता पर बहस तथ्यों, कानून और निर्धारित प्रक्रिया के आधार पर होनी चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है। चुनाव आयोग बार-बार यह भरोसा दिलाने की कोशिश कर रहा है कि एसआईआर मतदाताओं को बेहतर सुविधा देने की व्यवस्था है। इस प्रक्रिया का उद्देश्य है, कोई भी वैध और योग्य मतदाता छूटे नहीं। मोटे तौर पर एसआईआर का एक ही मकसद है, हर योग्य और वैध मतदाता को सूची में जोड़ना, दिए गए पते पर न रहे मतदाताओं और मृतकों का नाम सूची से हटाना। इसके साथ ही विदेशी और घुसपैठियों को मतदाता सूची से बाहर करना है। एक आरोप यह लग रहा है कि मतदाता सूची तैयार करने में ईसीआईनेट सॉफ्टवेयर की भूमिका बीएलओ और ईआरओ की तुलना में बढ़ गई है, जिसकी वजह से मतदाता सूची को फाइनल करने के ईआरओ के अधिकार दरकिनार हो गए हैं। लेकिन ऐसा नहीं है। ईसीआईनेट सिर्फ तकनीकी मंच है, जिसकी बुनियाद अधिकारियों द्वारा घर-घर से जुटाए आंकड़े हैं। नहीं भूलना चाहिए कि मतदाता सूची में किसी नाम को जोड़ने या उससे हटाने का निर्णय सिर्फ ईआरओ ही ले सकता है और वह भी जनप्रतिनिधित्व कानून 1950 और मतदाता सूची पंजीयन नियम 1960 के तहत, नोटिस और सुनवाई के बाद ही ऐसा कर सकता है। कहना न होगा कि ऐसा ही हो रहा है। लेकिन राजनीति इसे देखने की बजाय अपने हिसाब से घटनाओं और कार्यों की व्याख्या कर रही है।

केजरीवाल ने दिल्ली में 8 लाख फर्जी वोटरों का सबूत ईसी को दिया था; भाजपा नेता ने शेयर किया वो वीडियो

नई दिल्ली। दिल्ली में जारी मतदाता सूची की विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) प्रक्रिया और इसके बाद मसौदा मतदाता सूची से 47.56 लाख लोगों के नाम हटाए जाने को लेकर आम आदमी पार्टी समेत तमाम विपक्षी दल भड़के हुए हैं। इस दौरान AAP के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने तो इस मुद्दे को लेकर मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ मोर्चा भी खोल रखा है और वे लगातार उनसे इस्तीफा देने की मांग कर रहे हैं। लेकिन इसी बीच गुरुवार को वायरल हुए केजरीवाल के एक पुराने वीडियो ने सोशल मीडिया पर खलबली मचा दी है। दरअसल इस वीडियो में दिल्ली के पूर्व सीएम शहर की मतदाता सूची में लाखों फर्जी वोटर्स होने का आरोप लगाते हुए चुनाव आयोग के निष्पक्ष चुनाव के दावों पर सवाल उठाते नजर आ रहे हैं। इस वीडियो को भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव और कर्नाटक व बिहार में पार्टी के प्रभारी हरीश द्विवेदी ने गुरुवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर शेयर किया, जो कि जल्द ही वायरल भी हो गया। इस वीडियो में केजरीवाल खुद दिल्ली की मतदाता सूची फर्जी वोटर होने का आरोप लगाते नजर आ रहे हैं। पूर्व सीएम के वीडियो को शेयर करते हुए भाजपा नेता ने कहा, ये 2015 के अरविन्द केजरीवाल हैं, जो दिल्ली में 8 लाख डुप्लीकेट वोटरों का सबूत चुनाव आयोग को देते थे। अब SIR में फर्जी वोटरों को हटाते ही यही केजरीवाल फिर पलटी खा गए। भाजपा नेता ने केजरीवाल का 11 साल पुराना जो वीडियो शेयर किया, उसमें एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान वह मीडिया को जानकारी देते हुए कहते हैं, 'इस डेटा में जो मोटी-मोटी बातें पता चली हैं वो ये हैं कि दिल्ली के अंदर 3 लाख 96 हजार 914 मतदाताओं के 11 लाख 50 हजार 509 वोटर कार्ड्स बने हुए हैं। मोटे-मोटे तौर पर मैं बताऊं तो लगभग 4 लाख लोगों के लगभग साढ़े 11 लाख वोट बने हुए हैं। यानी 1-1 आदमी के 2-2, 3-3, 4-4 वोट बने हुए हैं।' आगे उन्होंने कहा, ये पूरी लिस्ट हमने सीडी के अंदर चुनाव आयोग को दी है। इसमें चार फील्ड मैच किए गए हैं नाम, पिता/पति का नाम, उम्र (एक साल प्लस-माइनस किया है) और रिश्ता, ये चार फील्ड ही इलेक्शन कमीशन भी मैच करता है, और जब ये चारों फील्ड दो लोगों के मैच करते हैं तो चुनाव आयोग उसको डुप्लिकेट वोट मानता है। तो ये चारों फील्ड हम लोगों ने मैच किए, तो पता चला कि 4 लाख लोगों के साढ़े 11 लाख वोट बने हुए हैं। इसके आगे उन्होंने कहा था, फिर इसमें हम लोगों ने फोटो मैच किए, अब ये चारों फील्ड तो कम्प्यूटर के जरिए मैच हो गई, लेकिन फोटो कम्प्यूटर के जरिए मैच नहीं हो सकते, उसको हम लोगों ने मैनुअली किया, और हमारे पास इतनी मैनपॉवर नहीं है कि हम सारा कर पाते, लेकिन फिर भी सैम्पल बेसिस पर हमने काफी किए हैं और उसके कुछ सैम्पल हम आपको स्क्रीन पर दिखाएंगे, कि किस तरह से मतलब साफ-साफ दिख रहा है कि एक ही आदमी के दो-दो, तीन-तीन, चार-चार वोट बने हुए हैं। तो एक प्रश्न ये उठता है कि 4 लाख लोगों के कुल साढ़े 11 लाख वोट बने हुए हैं, मतलब लगभग 8 लाख फर्जी वोट बने हुए हैं। मतलब 8 लाख फर्जी वोट अगर दिल्ली के इलेक्टोरल रोल्स पर हैं तो फिर निष्पक्ष चुनाव कैसे हो सकता है।

एक नज़र

कॉकरोचों के खिलाफ पहलवानों को बुलाने वाला रिंकू यादव अड़ा, बताया कब चलानी है लाठी

नई दिल्ली। एक तरफ जहां कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ जंतर-मंतर पर 10 अक्टूबर को प्रदर्शन की तैयारी में है तो दूसरी तरफ कुछ लोग इस आंदोलन का विरोध करने की अपील कर रहे हैं। पहलवानों और जिम जाने वाले लड़कों को जंतर-मंतर बुला रहा सोशल मीडिया एंफ्लुएंशर कुमुद राव उर्फ रिंकू यादव भी अपनी जिद पर अड़ा है। राव ने एक नया वीडियो जारी करके कहा है कि वह शनिवार को जंतर-मंतर जरूर जाएगा। उसने अपने साथ और भी लोगों को गुरुग्राम में जुटने और यहां से साथ चलने को कहा है। रिंकू ने अब कहा है कि वह लाठी का इस्तेमाल तभी करेगा जब कॉकरोच कुछ गड़बड़ी फैलाएंगे। यदि वे शांति से अपनी बात रखते हैं तो दिक्कत नहीं है। फेसबुक, इंस्टाग्राम और यूट्यूब पर करीब साढ़े चार लाख फॉलोअर्स वाला रिंकू यादव पिछले कुछ दिनों से एक के बाद एक कई वीडियो जारी करके लोगों से कॉकरोच जनता पार्टी के खिलाफ जमंर-मंतर पर जुटने को कह चुका है। उसका एक वीडियो बहुत वायरल है जिसमें उसने यूपी, हरियाणा और दिल्ली के पहलवानों, जिम जाने वाले लड़कों को लठ लेकर जंतर-मंतर चलने को कहा है। सीजेपी के सह-संयोजक सौरभ दास ने भी रिंकू के वीडियो को शेयर करते हुए आरोप लगाया कि सरकार नागरिकों को ही नागरिकों के खिलाफ खड़ा करके उपद्रव पैदा करना चाहती है। दास ने कहा कि सिविल वॉर जैसी स्थिति पैदा करने की कोशिश है। हरियाणा के रहने वाले रिंकू ने गुरुवार को एक नया वीडियो बनाकर अपना इरादा जाहिर किया। उसने गुरुग्राम में एकत्रित होकर साथ जंतर-मंतर चलने की अपील की। रिंकू ने कहा कि उन्हें किसी बेकसूर को लाठी नहीं मारनी है, बल्कि दंगा फसाद रोकना है। उसने कहा,10 अक्टूबर को हम जंतर मंतर पर जरूर जाएंगे लाठी के साथ। जो भी साथ चलना चाहें, चलें चाहें कहीं से भी हों। उसने सभी से शनिवार को सुबह 11 बजे गुरुग्राम दिल्ली बॉर्डर पर एंबिएंस मॉल के सामने इकट्ठा होंने को कहा। रिंकू ने कहा, भारी संख्या में पहुंचें क्योंकि यह देश बचाने का समय है। इन कॉकरोचों के इरादे अच्छे नहीं हैं, इनके पीछे जो ताकते हैं वो भी अच्छी सोच वाली नहीं। हमने किसी बेकसूर आदमी को लाठी नहीं मारना है। ना कोई दंगा फसाद करना है। हम दंगा रोकने के लिए हैं। यदि ये कॉकरोच अराजकता फैलाते हैं, संसद भवन में घुसने की कोशिश करते हैं या पुलिकर्मियों से मारपीट करते हैं तब इसका इस्तेमाल करना है। अगर ये प्रदर्शन करना चाहते हैं, कोई बात रकना चाहते हैं तो रख सकते हैं, हमें उससे कोई दिक्कत नहीं है।

डीयू का 'नॉर्थ कैंपस' होगा सुरक्षित, सीएम रेखा गुप्ता ने और स्ट्रीट लाइट और सीसीटीवी लगाने के दिए निर्देश

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने दिल्ली यूनिवर्सिटी के नॉर्थ कैंपस में स्ट्रीट लाइट और सीसीटीवी कैमरा की संख्या बढ़ाने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री कार्यालय की ओर से बताया गया है कि सीएम ने अधिकारियों को इस संबंध में निर्देश जारी कर दिए हैं और कहा है कि छात्रों की सुरक्षा के समझौता नहीं किया जा सकता और कोई भी लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। सीएम ने अधिकारयों से कहा है कि वे आर्ट्स, लॉ, साइंस फैकल्टी, पार्किंग एरिया और कैंपस के अन्य संवेदनशील हिस्सों का निरीक्षण करें और रोशनी की उचित व्यवस्था करें। मुख्यमंत्री कार्यालय ने एक बयान में बताया है कि आर्ट्स फैकल्टी में बुधवार को सीएम ने छात्रों के साथ बातचीत की थी और इस दौरान उनकी सुरक्षा, ट्रांसपोर्ट, हॉस्टल और कॉलेजों से जुड़े मुद्दों के बारे में पूछा था। इस दौरान उन्होंने छात्राओं से ये भी पूछा कि रात में आते-जाते समय उन्हें किन दिक्कतों का सामना करना पड़ता है या डर लगता है। कैंपस में अपने दौरे के दौरान सीएम ने कई ऐसी जगह देखीं जहां पर काफी अंधेरा था। उन्होंने अधिकारियों को ऐसी सभी जगहों की पहचान कर वहां लाइट लगाने के निर्देश दिए। इसके अलावा पेड़ों की शाखाएं छांटने के लिए कहा ताकि स्ट्रीट लाइट्स न ढके। सीएम ने इसके अलावा टूटे-फूटे फुटपाथ को लेकर नाराजगी जाहिर की और इन्हें तुरंत ठीक करने के लिए कहा। रेखा गुप्ता ने सीसीटीवी कैमरों का भी जायजा लिया और पूछा कि इनमें से कितनी चालू हैं। इसके साथ ही उन्होंने निर्देश दिए कि जरूरत हो तो और सीसीटीवी कैमरा इंस्टॉल किए जाएं। सीएम ने इस दौरान छात्राओं से पूछा कि क्या रात में पुलिस की गाड़ियां गश्त लगाती हैं या नहीं। इसके अलावा कैंपस में कचरे को देखकर उन्होंने इसे साफ करने का निर्देश जारी किया। रेखा गुप्ता ने इस दौरान छात्राओं से सेल्फ डिफेंस ट्रेनिंग लेने के लिए भी कहा। आपको बता दें कि सीएम के दौरे के दौरान पीडब्ल्यूडी, दिल्ली नगर निगम और दिल्ली पुलिस के अधिकारी भी मौजूद थे।

रेलवे में आउटसोर्सिंग के खिलाफ राष्ट्रीय सम्मेलन एवं नॉर्दर्न रेलवे मेंस यूनियन का 78वाँ वार्षिक आम अधिवेशन संपन्न

नई दिल्ली। ऑल इंडिया रेलवे मेंस फेडरेशन (एआईआरएफ) के बैनर तले आउटसोर्सिंग के विरुद्ध राष्ट्रीय सम्मेलन एवं नार्दर्न रेलवे मेन्स यूनियन का 78वाँ वार्षिक अधिवेशन दिनांक 8 से 10 अक्टूबर 2026 तक करनैल सिंह रेलवे स्टेडियम, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में 3,000 से अधिक रेल कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में एआईआरएफ के कार्यकारी अध्यक्ष श्री जे. आर. भोसले, एनडब्ल्यूआरईयू के महामंत्री श्री मुकेश माथुर, एसडब्ल्यूआएमयू के महामंत्री श्री के. राघुवेंद्र तथा एआईआरएफ के सहायक महामंत्री श्री एस. के. त्यागी के साथ-साथ उत्तर रेलवे के अपर महाप्रबंधक, प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी, प्रधान मुख्य सिग्नल एवं दूरसंचार इंजीनियर तथा मंडल रेल प्रबंधक, दिल्ली उपस्थित रहे और उन्होंने सम्मेलन को संबोधित किया। भारतीय रेल में अत्यंत संवेदनशील एवं संरक्षा से जुड़े कार्यों में बड़े पैमाने पर की जा रही आउटसोर्सिंग के विरुद्ध रेल कर्मचारियों में भारी आक्रोश है। इसमें रेलवे ट्रैक, सिग्नल, लोको शेड, कार्यशालाओं, कोचिंग डिपो तथा चल स्टॉक के रखरखाव से संबंधित कार्य शामिल हैं। रेल कर्मचारियों का प्रमुख संगठन ऑल इंडिया रेलवे मेंस फेडरेशन (एआईआरएफ) तथा उसकी संबद्ध यूनियन नॉर्दर्न रेलवे मेंस यूनियन (एनआरएमयू) ने रेलवे में तेजी से बढ़ते निजीकरण, ठेका प्रथा और आउटसोर्सिंग के खिलाफ इस अधिवेषन मे निर्णायक संघर्ष का ऐलान किया और स्पष्ट किया है कि यात्रियों की सुरक्षा और रेल परिचालन की संरक्षा की कीमत पर खर्चों में कटौती करने की नीति अब बर्दाश्त नहीं की जाएगी। अधिवेंषन मे मांग की कि निजीकरण एवं आउटसोर्सिंग पर तत्काल रोक लगाई जाए तथा रेलवे में लगभग दो लाख रिक्त पदों को शीघ्र भरा जाए। रेल कर्मचारियों ने ये विचार एनआरएमयू के 78वें वार्षिक आम अधिवेशन एवं 'आउटसोर्सिंग विरोधी राष्ट्रीय सम्मेलन' के दौरान व्यक्त किए। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य रेलवे की संरक्षा एवं रखरखाव से जुड़े महत्वपूर्ण कार्यों में अप्रशिक्षित और अकुशल ठेका कर्मचारियों की तैनाती तथा इससे उत्पन्न होने वाले गंभीर सुरक्षा जोखिमों की गहन समीक्षा करना था। एआईआरएफ एवं एनआरएमयू के पदाधिकारियों ने कहा कि भारतीय रेल करोड़ों देशवासियों के लिए परिवहन का सबसे सुविधाजनक, विश्वसनीय और किफायती साधन है। रेलवे का सुरक्षित, सुचारु एवं दुर्घटनामुक्त परिचालन नियमित, कुशल और तकनीकी रूप से प्रशिक्षित रेल कर्मचारियों के दिन-रात किए जाने वाले अथक परिश्रम का परिणाम है। एआईआरएफ के कार्यकारी अध्यक्ष एवं उदघाटनकर्ता श्री जे. आर. भोसले ने कहा कि औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान अथवा इंजीनियरिंग डिप्लोमा पूरा करने के बाद कर्मचारियों को कुशल तकनीशियन एवं तकनीकी कर्मचारी बनाने के लिए रेलवे द्वारा छह माह से लेकर एक वर्ष तक का गहन एवं कठोर प्रशिक्षण दिया जाता है। सीनियर सेक्शन इंजीनियर , जूनियर इंजीनियर और तकनीशियन जैसे पदों पर कार्यरत कर्मचारी कार्यप्रणाली की वैज्ञानिक एवं तकनीकी समझ रखते हैं। इसके बावजूद प्रशासन द्वारा अपनाई जा रही वर्तमान नीतियों के कारण अत्यंत चिंताजनक स्थिति उत्पन्न हो गई है। नेतृत्वं ने बताया कि रेलवे ट्रैक की गश्त एवं रखरखाव, सिग्नलिंग एवं दूरसंचार, चल स्टॉक, कोचिंग डिपो, लोको शेड तथा स्टेशन मास्टर, पॉइंट्समैन और गैंगमैन जैसे संवेदनशील पदों से जुड़े कार्य भी निजी एजेंसियों एवं ठेकेदारों को सौंपे जा रहे हैं। उचित तकनीकी योग्यता और पर्याप्त संरक्षा प्रशिक्षण के अभाव में अकुशल एवं अनुभवहीन ठेका कर्मचारियों से रेल परिचालन से जुड़े जटिल कार्य कराए जा रहे हैं। इससे रेल दुर्घटनाओं का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। एआईआरएफ एवं एनआरएमयूके महामंत्री श्री शिव गोपाल मिश्रा ने रेलवे में आउटसोर्सिंग के कारण उत्पन्न संरक्षा संकट तथा ठेका कर्मचारियों के अमानवीय शोषण की कड़ी आलोचना की। ठेका व्यवस्था की वास्तविक स्थिति उजागर करते हुए उन्होंने कहा कि आज स्थिति यह हो गई है कि रेलवे में शायद ही कोई ऐसा कार्य बचा हो, जिसे आउटसोर्सिंग से बाहर रखा गया हो। वर्तमान में ट्रैक एवं सिग्नल के रखरखाव का कार्य भी बाहरी एजेंसियों को सौंपा जा रहा है। यहां तक कि तकनीशियनों, इंजीनियरों, कंप्यूटर ऑपरेटरों और गैंगमैनों की नियुक्ति भी इसी व्यवस्था के तहत किए जाने की बात कही जा रही है। श्री मिश्रा ने कहा, कि हे अकुशल कर्मचारी हों या कुशल कर्मचारी, सभी की भर्ती निजी एजेंसियों के माध्यम से की जा रही है।

ठेकेदार सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम मजदूरी देने के लिए भी तैयार नहीं हैं। रेलवे में पॉइंट्समैन, ट्रैकमैन और अन्य तकनीकी कर्मचारी रेलगाड़ियों के सुचारु परिचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन संरक्षा श्रेणियों में रेलवे के पास सीनियर सेक्शन इंजीनियर और जूनियर इंजीनियर जैसे प्रशिक्षित पदाधिकारी होते हैं। उन्होंने आगे कहा, रेलवे में प्ज्प् उत्तीर्ण कर्मचारियों को एक वर्ष का प्रशिक्षण दिया जाता है, डिप्लोमाधारियों को छह माह का प्रशिक्षण दिया जाता है तथा गैर-प्ज्प् कर्मचारियों को भी एक वर्ष का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इस प्रकार रेलवे कुशल एवं प्रशिक्षित कार्यबल तैयार करता है। इसके विपरीत, अप्रशिक्षित कर्मचारियों और तकनीशियनों से संरक्षा से जुड़े कार्य कराना रेल सुरक्षा को गंभीर खतरे में डालना है।

रेप पीड़िता दिव्यांग किशोरी को राहत, हाई कोर्ट ने 26 हफ्ते का गर्भ गिराने को दी मंजूरी

नई दिल्ली। दिल्ली हाई कोर्ट ने एक मानसिक रूप से दिव्यांग 16 साल की रेप पीड़िता को उसके 26 हफ्ते के गर्भ को समाप्त करने की अनुमति दे दी है। माता-पिता द्वारा छोड़ दिए जाने के बाद वह अपने मामा और नानी के साथ रह रही है। अदालत ने एलएनजेपी अस्पताल को जल्द से जल्द यह प्रक्रिया पूरी करने का निर्देश दिया। मेडिकल बोर्ड ने कम उम्र और रीढ़ की हड्डी की समस्या के कारण गर्भावस्था जारी रखने को अधिक जोखिम भरा माना था। किशोरी को उसके माता-पिता ने सन 2022 में छोड़ दिया था। तब से वह अपने मामा और नानी की देखरेख में रह रही है। जस्टिस मनमीत प्रीतम सिंह अरोड़ा की पीठ ने किशोरी की तरफ से उसके मामा द्वारा दायर याचिका पर यह आदेश दिया है। अदालत ने लोकनायक जयप्रकाश अस्पताल (एलएनजेपी) को निर्देश दिया कि वह आवश्यक सावधानियों, चिकित्सकीय प्रोटोकॉल व कानून में निर्धारित सुरक्षा उपायों का पालन करते हुए गर्भावस्था समाप्त करने की प्रक्रिया जल्द से जल्द पूरी करे। मामले में बताया गया कि किशोरी मानसिक रूप से दिव्यांग है। अदालत तो यह भी बताया गया कि पीड़िता कथित यौन शोषण के अपराध या इस बात को समझने की स्थिति में नहीं थी कि वह गर्भवती है। 28 सितंबर को दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल में जांच के दौरान उसकी गर्भावस्था करीब 25 हफ्ते एक दिन की पाई गई। इसके बाद एलएनजेपी अस्पताल में गठित मेडिकल बोर्ड ने जांच कर गर्भावस्था की अवधि करीब 26 सप्ताह बताई। मेडिकल बोर्ड ने गर्भावस्था समाप्त करने की अनुमति देने के पक्ष में राय दी। हालांकि उसने प्रक्रिया को जोखिम भरा बताया। मेडिकल बोर्ड के अनुसार, किशोरी की कम उम्र में गर्भावस्था, रीढ़ की हड्डी से जुड़ी लॉर्डोटिक असामान्यता व पल्मोनरी फंक्शन टेस्ट कराने में असमर्थता के कारण गर्भावस्था जारी रखना उसके लिए ज्यादा जोखिमपूर्ण है। बोर्ड ने संभावित प्रतिबंधात्मक फेफड़ों की बीमारी की आशंका भी जताई। पीठ ने माना कि गर्भावस्था मेडिकल टर्मिनेशन ऑफ प्रेग्नेंसी एक्ट, 1971 में निर्धारित 24 सप्ताह की सामान्य वैधानिक सीमा से आगे बढ़ चुकी है। इसके बावजूद अदालत ने कहा कि मामले की असाधारण परिस्थितियों में संविधान के अनुच्छेद 226 के तहत अपने विशेष अधिकार क्षेत्र का इस्तेमाल करना उचित है। पीठ ने कहा कि किशोरी की देखभाल उसके ननिहाल के परिवार के सदस्य कर रहे हैं, जिसकी पुष्टि जांच अधिकारी ने भी की है। मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट से मामले में तत्काल कार्रवाई की जरूरत भी सामने आती है। ऐसे में किशोरी के पिता की तलाश पूरी होने का इंतजार करना उचित नहीं होगा। अदालत ने अपने फैसले में कहा कि संविधान का अनुच्छेद 21 जीवन व व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार की रक्षा करता है, जिसमें गरिमा के साथ जीने का अधिकार, शारीरिक अखंडता, निर्णय लेने की स्वायत्तता और प्रजनन संबंधी विकल्प का अधिकार भी शामिल है। पीठ ने कहा कि ये अधिकार उस स्थिति में और महत्वपूर्ण हो जाते हैं जब राहत मांगने वाली नाबालिग हो और गर्भावस्था यौन शोषण के कारण हुई हो।

फरीदाबाद कैले की कीमत पर सीनियर एचआर मैनेजर की हत्या, एनकाउंटर के बाद पुलिस ने दबोचे दो और आरोपी

नई दिल्ली। फरीदाबाद में पिछले गुरुवार इलेक्ट्रिक गाड़ी कंपनी के सीनियर एचआर मैनेजर की हत्या के मामले में दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है। यह हत्या केले की कीमत को लेकर हुए विवाद के बाद हुई थी। आरोपियों में से एक को क्राइम ब्रांच की टीम के साथ मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार किया गया, जबकि दूसरे ने सरेंडर कर दिया। पुलिस ने बताया कि इससे पहले इस मामले में तीन लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। चार अक्टूबर को एचआर मैनेजर लक्ष्मण की डीलर चौक पर दो आरोपियों ने चाकू मारकर हत्या कर दी थी। यह घटना तब हुई जब फल बेचने वाले के साथ एक दर्जन केले के लिए 100 मांगने को लेकर उनकी बहस हो गई थी। फल बेचने वाले रिंकू ने अपने साथियों को बुलाया, जिन्होंने लक्ष्मण और उनके भतीजे महेश पर हमला कर दिया। पुलिस ने बताया कि इस घटना में महेश घायल हो गए और उनका इलाज चल रहा है। फरीदाबाद पुलिस के पीआरओ यशपाल यादव ने बताया कि मुठभेड़ सेक्टर 62 में रात करीब 2 बजे हुई, जब दोनों आरोपी सीवर-पाइप के गोदाम में छिपे हुए पाए गए। उन्होंने कहा, क्राइम ब्रांच की टीम को उनकी लोकेशन के बारे में जानकारी मिली और उन्होंने छापेमारी की। इस दौरान तरुण उर्फ नवीन ने भागने की कोशिश में पुलिस टीम पर गोली चला दी। उन्होंने बताया कि तरुण ने पुलिस पर दो राउंड फायरिंग की। उक्राइम ब्रांच के जवानों ने जवाबी कार्रवाई की और तरुण के पैर में गोली लग गई। उसे मौके पर ही पकड़ लिया गया और इलाज के लिए बादशाह खान सिविल अस्पताल ले जाया गया। पुलिस ने बताया कि मौके से एक देसी पिस्तौल भी बरामद की गई, जिसका इस्तेमाल फरीदाबाद के ऊंचा गांव के रहने वाले तरुण ने पुलिस पर फायरिंग करने के लिए किया था। मुठभेड़ शुरू होने से पहले तरुण का साथी जतिन सरेंडर कर चुका था।

यूपी में क्यों एक बाप 4 बेटों संग चिता सजाकर अनशन पर बैठ गया, कहा-न्याय दो या जिंदा जला दो

ग्रेटर नोएडा। आशीष धामा, ग्रेटर नोएडा गौतमबुद्धनगर जिले के जेवर में जाति प्रमाण पत्र को लेकर एक बड़ा विवाद खड़ा हो गया है। यहां एक गांव में पिता और उसके चार बेटे अपनी अर्थियां सजाकर अनशन पर बैठ गए हैं। उनका कहना है कि पिछले कई सालों से वे जाति प्रमाण पत्र के लिए भटक रहे हैं, लेकिन हर बार असफलता हाथ लगी।k अनशन पर बैठे परिवार ने जहां यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ को भगवान स्वरूप बताया तो डीएम मेधा रूपम पर अपना आक्रोश निकाला। मामला जेवर के कानीगढ़ी गांव का है। यहां के निवासी सुंदर सिंह का कहना है कि उनके और उनके बच्चों का जाति प्रमाण पत्र नहीं बनाया जा रहा है। इसकी वजह से चिता बनाकर इसके सामने आमरण अनशन पर बैठ गए हैं। सुंदर सिंह ने सीएम योगी आदित्यनाथ से न्याय की गुहार लगाई है। उन्होंने पोस्टर पर लिखा है कि या तो उन्हें न्याय दिया जाए या जिंदा जलवा दिया जाए। अनशन का वीडियो तेजी से सोशल मीडिया पर भी वायरल हो रहा है। सुंदर बताते है कि वह अगरिया जाति के हैं और मजदूरी पर परिवार का पालन पोषण करते है। उनके चार बच्चे हैं। स्कूल में जाति प्रमाण पत्र देने के लिए वर्षों से संघर्ष कर रहे हैं। बताया कि उनके बच्चों का जाति प्रमाण पत्र तहसील स्तर से निस्तारण के बाद जिला स्तर पर पहुंच गया था, लेकिन डीएम ने उनका आवेदन निरस्त कर दिया। उन्होंने बताया कि डीएम ने यह कहकर उनका आवेदन निरस्त किया कि गौतमबुद्धनगर में अगरिया जाति के लोग निवास नहीं करते हैं।

सीमापुरी बिल्डिंग हादसा मलबा उगल रहा लाश, 2 और शव बरामद; मौत का आंकड़ा पहुंचा

नई दिल्ली। दिल्ली के सीमापुरी इलाके में चार मंजिला इमारत गिरने की घटना में मृतकों की गिनती अब तक जारी है। कल दोपहर हुए हादसे के बाद से लगातार बचाव अभियान जारी है। कल शाम तक मरने वालों की संख्या 3 थी। इसमें एक गर्भवती महिला और दो नाबालिग शामिल थे। लेकिन, आज शाम होते-होते 2 और शव बरामद हुए हैं। इस तरह मरने वालों की संख्या बढ़कर पांच हो गई है। अधिकारियों के मुताबिक, मृतकों की पहचान नुसरत उर्फ गुरिया और हाजरा बीबी के रूप में हुई है। हादसे के बाद इलाके में राहत और बचाव अभियान जारी है। यह हादसा बुधवार दोपहर पूर्वी दिल्ली के सीमापुरी इलाके में ईदगाह मछली मंडी के पास हुआ था। चार मंजिला इमारत अचानक भरभराकर गिर गई थी। हादसे की सूचना मिलते ही दिल्ली पुलिस, दिल्ली अग्निशमन सेवा, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (NDRF), दिल्ली आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (DDMA), नगर निगम (MCD) और दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड (DUSIB) की टीमें मौके पर पहुंच गई थीं। अधिकारियों के अनुसार, बचाव दलों ने मलबे में तलाशी अभियान के दौरान गुरुवार को दो और शव बरामद किए। इससे हादसे में जान गंवाने वालों की संख्या पांच हो गई। इससे पहले बरामद शवों में 12 साल की एक बच्ची, 21 वर्षीय गुलफसा और करीब डेढ़ साल का एक बच्चा शामिल था। अधिकारियों के मुताबिक, गुलफसा करीब चार महीने की गर्भवती थी। बचाव दल लगातार मलबे को हटाकर यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि कहीं कोई अन्य व्यक्ति उसके नीचे तो नहीं फंसा है। मौके पर भारी मशीनों के साथ राहत एवं बचाव कार्य चलाया जा रहा है। हादसे में घायल हुए आठ लोगों को मलबे से सुरक्षित बाहर निकाला गया। सभी घायलों को इलाज के लिए तहिरपुर स्थित राजीव गांधी सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल ले जाया गया है। अस्पताल में घायलों का उपचार चल रहा है। अधिकारियों के मुताबिक, मंगलवार शाम उत्तराखंड में आए भूकंप के झटकों के बाद इमारत में दरारें आ गई थीं। इसके अगले दिन बुधवार दोपहर इमारत ढह गई। हालांकि अधिकारियों ने कहा है कि अभी तक इमारत गिरने की सटीक वजह की पुष्टि नहीं हुई है। भूकंप के झटकों और इमारत में आई दरारों के बीच संबंध की भी जांच की जा रही है।

उत्तर पश्चिम रेलवे

ई-टेण्डर निविदा सूचना
दो पैकेट प्रणाली

उप मुख्य विद्युत अभियंता/परियोजना, उ. प. रेलवे, जयपुर द्वारा भारत संघ के राष्ट्रपति एवं उनकी ओर से निम्नलिखित कार्य के लिये खुली ई-निविदा का ऑन लाईन ई-टेण्डर आमंत्रित किया जाता हैं। निविदाकार अपना मूल/परिवर्तित प्रस्ताव ई - निविदा बंद होने की तारीख व समय से पूर्व ऑन लाईन भर दें। **1 ई-टेण्डर नोटिस संख्या** : एनडब्ल्यूआर-इल-प्रो-2x25के वी-25-26-जे पी-पीएसएसए -टी-07 आर **2 कार्य का नाम व लोकेशनः** उत्तर पश्चिम रेलवे पर विद्युत परियोजना इकाई द्वारा निष्पादित किए जा रहे 2x25 केवी कर्षण उन्नयन कार्यों के संबंध में विभिन्न निर्माण स्थलों/खंडों पर विद्युत ताप विद्युत (ओएचई) उन्नयन/संशोधन संबंधी और अन्य सहायक कार्यों के लिए परियोजना पर्यवेक्षण सेवाएं प्रदान करने हेतु परियोजना पर्यवेक्षण सेवा एजेंसी (पीएसएसए) की नियुक्ति के लिए प्रस्ताव हेतु अनुरोध (आरएफपी) आमंत्रित किया जाता है। यह परियोजना 24 माह की निर्माण अवधि के लिए है। **3 अनुमानित लागत** : रूपये 32,92,63,669.38/- **4 धरोहर राशि** : रूपये 17,96,300/- **5 कार्य पूरा होने की अवधिः** चोब्बीस माह **6 ई-टेण्डर भरने की अंतिम तिथि और समय** : 06.11.2026(15:00 hrs.) **7 वेबसाईट का विवरणः** www.ireps.gov.in. **नोटः** कोई भी मैन्युवल टेण्डर स्वीकार नही किया जायेगा।

1448-DE/26

हमें /NWRailways NWRailways_पर फॉलो करें

भारतीय रेल

भारत सरकार
रेल मंत्रालय
(रेलवे बोर्ड)

सं. 2026/आरएस (डब्ल्यूटीए)-149/टेंडर/570 नई दिल्ली, दिनांक : 08.10.2026

VB ट्रेन सेट के सॉलिड फोर्ज्ड व्हील की खरीद के लिए मोटर कोच हेतु ड्राइंग नंबर 89002012 alt. 'b' और ड्राइंग नंबर AAA02161 alt 'a' तथा ट्रेलर कोच हेतु ड्राइंग नंबर 89102009 alt-'a' और ड्राइंग नंबर AAA02173 alt 'a' के अनुसार, दिनांक 26.11.2026 को खोली जाने वाली विश्व ई-निविदा सं: डब्ल्यूटीए-570.

भारत के राष्ट्रपति की ओर से एवं उनके लिए, वंदे भारत ट्रेन सेट हेतु सॉलिड फोर्ड पहियों की खरीद के लिए इलेक्ट्रॉनिक निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है: (i) मोटर कोचों के लिए (सेमी-फिनिश्ड), Drg. No. $9002012 Alt. 'b' के अनुसार; (ii) ट्रेलर कोचों के लिए (सेमी-फिनिश्ड), Drg. No. 89102009 Alt. 'a' के अनुसार; (iii) मोटर कोचों के लिए (रफ मशीन्ड), Drg. No. AAA02161 Alt. 'a' के अनुसार; तथा (iv) ट्रेलर कोचों के लिए (रफ मशीन्ड), Drg. No. AAA02173 Alt.'a' के अनुसार; और RDSO Spec. No. IRS R-19/93 Part-II (Rev. 6) के अनुरूप। इच्छुक बोलीदाताओं को सलाह दी जाती है कि वे अधिक जानकारी, निविदा दस्तावेज़ डाउनलोड करने तथा अपनी ई-बोलियाँ ज़मा करने के लिए वेबसाइट देखें। इस निविदा से संबंधित कोई भी शुद्धिपत्र केवल उक्त वेबसाइट पर अपलोड किए जाएंगे; इन्हें प्रिंट मीडिया में प्रकाशित नहीं किया जाएगा।

निदेशक, रेल भंडार (एम)
रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड)
रेल भवन, रायसीना रोड
नई दिल्ली-110001
दूरभाष सं. 011-23073191
ई-मेल आईडी- drsm@rb.railnet.gov.in

3504/2026

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

उत्तर रेलवे

ई-निविदा सूचना

वरिष्ठ मंडल वि. अभि./क. वि., डी. आर. एम. ऑफिस, स्टेट एंट्री रोड, नई दिल्ली, भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्न कार्य हेतु खुली निविदायें आमंत्रित करते हैं:-

1	कार्य का नाम व स्थान	भाग-D: DLI डिवीज़न के JHL/TSS की बढ़ती लोड जरूरतों को पूरा करने के लिए मौजूदा OHE क्षमता को बढ़ाने हेतु फीडर वायर की व्यवस्था।
2	अनुमानित लागत	रु. 8,90,92,023.42/-
3	बयाना राशि	रु. 17,81,900/-
4	ई-निविदा ऑनलाइन जमा करने की अवधि	19.10.2026 (00:00 बजे) से 02.11.2026 (15:00 बजे तक)
5	ई-निविदा समापन की अंतिम तथा ई-निविदा खुलने की तारीख और समय	02.11.2026 (15:00 बजे)
6	निविदा छपाई की लागत	Capital (PH-36)
7	वेबसाइट विवरण जहां निविदा दस्तावेजों का पूरा विवरण देखा जा सकता है	www.ireps.gov.in

निविदा संख्याः 32-क.वि.-नई दिल्ली-2026-27 दिनांकः 07.10.2026 3515/2026

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

उत्तर रेलवे

निविदा सूचना (ई-टेंडरिंग द्वारा)

कार्य का नाम तथा स्थान	दिल्ली मंडल के 10 स्टेशनों यानी GHH, PT, MSP, MOZ, DBD, JDW, SSZ, KIY, KLE और PHWR के लिए वेस्ट्रेस मेक ईआई का 3 वर्षों का व्यापक वार्षिक रखरखाव अनुबंध।
कार्य की अनुमानित लागत (₹)	₹ 26,92,608.48/-
धरोहर राशि (₹)	₹ 3,14,600/-
कार्यालय का पता	वरिष्ठ मंडल संकेत एवं दूरसंचार अभियंता-C, तृतीय तल, संकेत एवं दूरसंचार ब्रांच, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, स्टेट एंट्री रोड, नई दिल्ली-110055
निविदा प्रपत्र जमा करने तथा निविदा खुलने का दिनांक तथा समय	निविदा प्रपत्र अपलोड करने का समय 09.10.2026 / निविदा खुलने का दिनांक 02.11.2026 15:00 बजे तक
वेब साइट एवं नोटिस बोर्ड का स्थान जहां से विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है	उत्तर रेलवे की वेबसाइट www.ireps.gov.in पर देखें या देखें नोटिस बोर्ड, तृतीय तल, संकेत एवं दूरसंचार ब्रांच, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, स्टेट एंट्री रोड, नई दिल्ली-110055

निविदा संख्या: 558-Sig-16-M-T-AMC-101 दिनांक: 09.10.2026 3514/2026

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

इनकाउंटर काफ़ी नहीं, बेटी के हत्यारे की चाहिए लाश छात्रा की हत्या पर भड़के परिजन

झांसी। यूपी के झांसी में एक युवती की गोली मारकर हत्या कर दी। हत्यारा युवती की शादी कहीं और होने से नाराज था। एक दिन पहले हुई छात्रा की हत्या से परिवार वालों का गुस्सा अब तक शांत नहीं हुआ है। पुलिस की कार्रवाई का भरोसा दिलाया तो वह भड़क गए। बोले, नहीं–नहीं अभी कुछ बात करेंगे। हमारी बेटी चली गई। हत्यारे की लाश लेकर आओ। एनकाउंटर से कुछ नहीं होगा। जब तक हत्यारे की लाश नहीं सामने आती तब तक चैन नहीं मिलेगी। हंसती–खेलती बेटी की हत्या कर दी। सीपरी बाजार थाना क्षेत्रान्तर्गत सिद्धेश्वर नगर में बुधवार को 10वीं की छात्रा की गोली मारकर हत्या के बाद शुक्रवार माता–पिता शव देख बिलख पड़े। मां इतना कहते ही बेहोश हो गई। पिता सोनू ने बताया कि भले ही एकाउंटर में गोलीकर मुठभेड़ में कमल को पकड़ लिया है। लेकिन, वह इससे खुश नहीं हैं। यह अधूरी कार्रवाई है। माता–पिता ने कहा कि उनकी पीएम मोदी व सीएम योगी से मांग है कि आरोपी को फांसी होनी चाहिए तभी उनकी बेटी की आत्मा को शांति मिलेगी। माँ ने कहा पहले हत्यारोपी लाश सामने आये, वर्ना हम उसे गोली मार देंगें। सीपरी बाजार थाना क्षेत्र के सिद्धेश्वर नगर में प्रेमी कमल द्वारा बुधवार को 19 वर्षीय प्रेमिका चंचल की घर में घुसकर गोली मारकर हत्या कर दी थी। घटना के पांच घंटे बाद ही पुलिस ने मुठभेड़ में आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। उसके पैर में गोली लगी। लेकिन इतने पर भी मृतका का पिता सोनू व मां सपना संतुष्ट नहीं हैं। पिता सोनू ने कहा कि पुलिस ने काम तो सही किया, लेकिन अभी पूरा न्याय नहीं मिला। पूरा न्याय तभी मिलेगा जब कमल को फांसी होगी। वहीं माँ सपना रट लगाए है कि उसकी लाश चाहिए, इससे कम कुछ नहीं। झांसी के खोड़न गांव में युवती का रिश्ता कहीं और तय होने से नाराज युवक ने उसकी गोली मारकर हत्या कर दी थी। जानकारी के अनुसार 19 वर्षीय बेटी चंचल सीपरी बाजार स्थित महाविद्यालय में 10वीं की छात्रा थी। वह अपनी दादी के साथ आईटीआई सिद्धेश्वर नगर में रहती थी। खोड़न में उसे एक युवक परेशान करता था। इसी वजह से उसे वहां रखा गया था। बेटी का रिश्ता भी तय कर दिया था। दिसंबर में उसकी शादी थी। बुधवार दोपहर वह घर पर अकेली थी। इसी बीच एक युवक दीवार फांदकर घर में घुस गया और चंचल की कनपटी से सटाकर गोली मारकर हत्या कर दी। सिद्धेश्वर नगर में 10वीं की छात्रा की गोली मारकर हुई हत्या के बाद पूरा इलाका दहल उठा। वहीं दादी और बुआ बेहोश हो गई। परिजन सुध–बुध खो बैठे। न तो किसी को तमंचा की आवाज आई और न ही कोई चीखें सुनाई। जब दादी और चाचा घर पहुंचे तो अंदर भतीजी खून से लथपथ पड़ी थी। उसकी मौत हो चुकी थी। मोनू रायकवार ने आरोप लगाया कि वह सुबह घर पर थे। उन्होंने कहा कि मछली का कांटा लेने जा रहे हैं। इसके बाद चंचल ने अंदर से दरवाजा लगा लिया। मोनू ने बताया कि वह खोड़न गए तो कमल नामक युवक तमंचा लहरा रहा था। जिस पर उसकी मां ने उसे समझाया। बताया, चंचल की शादी 12 दिसंबर को होना थी। जिससे सनकी प्रेमी नाराज था। बुधवार को जब चंचल घर में अकेली थी, तभी मौका पाकर प्रेमी उसकी हत्या कर दी और हत्या कर हत्यारा फरार हो गया। हत्यारा कब और कैसे दीवार फांदकर बंद कमरे में घुसा और 19 वर्षीय युवती की हत्या कर फरार हो गया।

एक नज़र

यूपी चुनाव से पहले रामविलास की पुण्यतिथि पर लखनऊ में जुटान, चिराग के न्योते पर योगी भी पहुंचे

लखनऊ। यूपी चुनाव से पहले लोक जनशक्ति पार्टी (लोजपा) के संस्थापक राम विलास पासवान की 6वीं पुण्यतिथि पर लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम में बड़ी जुटान देखने को मिली। लोजपा पार्टी अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान के न्योते पर सीएम योगी ने भी कार्यक्रम में शिरकत की। इसके अलावा राज्यपाल आनंदीबेन पटेल और अनुप्रिया पटेल, मंत्री दयाशंकर सिंह, लोनी विधायक नन्द किशोर गुर्जर भी शामिल हुए। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रामविलास पासवान की पुण्यतिथि पर उन्हें यूपी की समस्त जनता की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय पासवान जी को जो सम्मान बिहार में मिला है, वही सम्मान उन्हें यूपी में भी दिलाएंगे। योगी ने कहा कि उनका पूरा जीवन सामाजिक लड़ाई के लिए समर्पित था। लखनऊ के दयाल बाग में आयोजित पुण्यतिथि समारोह में मुख्यमंत्री ने कहा कि 50 वर्ष पहले रामबिलास पासवान ने जो सामाजिक लड़ाई शुरू की थी, उसकी राजनीतिक विरासत को अब उनके पुत्र चिराग पासवान आगे बढ़ा रहे है। मुख्यमंत्री योगी ने यूपी में इस आयोजन के लिए आभार जताया। प्रदेश में विधानसभा चुनाव को देखते हुए लोक जनशक्ति पार्टी (राम विलास) ने भी अपनी गतिविधियां तेज कर दी है। पुण्यतिथि के बहाने पार्टी अपनी स्थिति के आकलन के ही साथ ही दूसरों को शक्ति का अहसास करा पासी समाज को लामबंद करने की भी कोशिश है। इससे पहले 5 जुलाई को पार्टी संस्थापक राम विलास पासवान की जयंती भी आईजीपी में आयोजित की गई थी। अभी 27 सितंबर को 'यूथ बोले तो' कार्यक्रम प्रयागराज में था। यहां युवाओं से जुड़े मुद्दे उठाएगा। शिक्षा, रोजगार तथा आरक्षण का मुद्दा केंद्र में था। युवा संवाद की शुरुआत 24 सितंबर को पटना से हुई थी। आज गुरुवार को सुल्तानपुर रोड पर दयाल बाग इन इको रिसॉर्ट में पुण्यतिथि कार्यक्रम किया। कार्यक्रम में पार्टी संस्थापक को श्रद्धांजलि के बहाने विधानसभा चुनाव के लिए भी कार्यकर्ताओं में जोश भरा। केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री चिराग पासवान पहले ही 403 सीटों पर चुनाव तैयारी का ऐलान कर चुके हैं। एनडीए के दलों की चिंताओं की परवाह किए बगैर अपने संगठन को धार देने में जुटे हैं। पार्टी के बड़े नेताओं का कहना है कि सीट शेयरिंग जैसे मुद्दे पर अभी कोई बात नहीं हुई है। हम समाज के लोगों को जोड़ रहे हैं। एनडीए का साथ रहे या न रहे पार्टी अपने उम्मीदवार तो उतारेगी ही। चुनाव प्रभारी तैनात कर दिए हैं। झारखंड, बिहार, दिल्ली में हम साथ लड़े तो यूपी में क्यों नहीं।

यूपी में सभी रिटेल मेडिकल स्टोर को बनानी होगी वेबसाइट, दिखानी होगी ये डिटेल

अलीगढ़। यूपी के अलीगढ़ में मरीजों को दवाओं की कीमत और फार्मेसी से संबंधित जरूरी जानकारी सहज रूप से उपलब्ध कराने के लिए खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग ने प्रदेश की रिटेल फार्मेसियों के लिए महत्वपूर्ण निर्देश जारी किए हैं। इसके तहत प्रत्येक रिटेल फार्मेसी को अपनी सार्वजनिक वेबसाइट स्थापित कर उस पर लाइसेंस, फार्मासिस्ट और साप्ताहिक स्टॉक सहित निर्धारित सूचनाएं प्रदर्शित करनी होंगी। वेबसाइट का यूआरएल फार्मेसी के काउंटर पर प्रमुखता से प्रदर्शित करने के साथ ही क्यू आर कोड अथवा अन्य माध्यम से ग्राहकों को उपलब्ध कराया जाएगा। औषधि निरीक्षक दीपक लोधी ने बताया है कि आयुक्त, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन, उत्तर प्रदेश द्वारा जारी आदेश के अनुसार वेबसाइट पर फार्मेसी का नाम, लाइसेंस संख्या, लाइसेंस धारक का नाम एवं परिसर का पता व नियुक्त फार्मासिस्ट का नाम, पंजीकरण संख्या और फोटो प्रदर्शित करना अनिवार्य होगा। स्टॉक से संबंधित जानकारी भी साप्ताहिक रूप से अपडेट करनी होगी। उन्होंने यह भी बताया कि अस्पताल परिसर में संचालित व अस्पताल के इन–पेशेंट मरीजों के लिए संचालित फार्मेसियों, जहां मरीजों के पास दवा खरीदने का व्यावहारिक विकल्प सीमित रहता है, उन्हें अपनी वेबसाइट पर दवाओं की खरीद दर और उपभोक्ता को निर्धारित विक्रय दर की जानकारी भी प्रदर्शित करनी होगी। इसके साथ निर्माता का नाम, ब्रांड नाम और जेनेरिक दवा का नाम भी उपलब्ध कराया जाएगा। औषधि निरीक्षक के अनुसार यह व्यवस्था दवाओं की कीमतों में पारदर्शिता बढ़ाने और मरीजों को दवाओं से संबंधित आवश्यक जानकारी आसानी से उपलब्ध कराने के उद्देश्य से की गई है। ड्रग प्राइस कंट्रोल आर्डर –2013 के प्रावधानों के तहत रिटेलर एवं डीलर द्वारा निर्माता या आयातक की मूल्य सूची को ग्राहकों की सहज पहुंच वाली प्रमुख जगह पर प्रदर्शित किया जाना भी आवश्यक है। खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग ने स्पष्ट किया है कि यह व्यवस्था किसी नए मूल्य नियंत्रण आदेश के रूप में नहीं, बल्कि जनहित में फार्मेसियों द्वारा आवश्यक सूचनाओं के स्व–प्रकटीकरण की व्यवस्था के रूप में लागू की जा रही है।

21 लाख की बाइक, 34 लाख की बीएमडब्ल्यू कार, थाईलैंड वाली पत्नी ने पति पर लुटाई दौलत, फिर पता चली सच्चाई

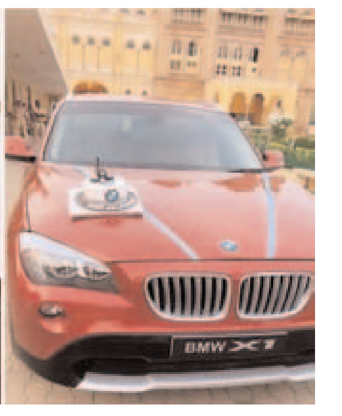

कानपुर। अपने इंडियन पति को ढूंढते हुए थाईलैंड की एक महिला कानपुर पहुंच गई। हाथ में तस्वीरें लेकर महिला अपने पति को ढूंढ रही थी। महिला ने पति को लेकर जो बातें बताई उसे सुनकर हर कोई सन्न रह गई। महिला ने पति को लेकर कई ऐसे राज खोले जिसके बारे में किसी को नहीं पता था। थाईलैंड की रहने वाली अपसॉर्न नाम की महिला ने बताया कि उसके साथ धोखा हुआ है। शादीशुदा इरफान के नाम के व्यक्ति से उसका प्रेम–प्रसंग हो गया था। उसने उससे शादी कर ली। इरफान के ऊपर उसने लाखों रुपये लुटा दिए। उन रुपयों से इरफान ने लग्जरी बाइक और लग्जरी कार भी खरीदी थीं। थाईलैंड में रहने वाली महिला अपसॉर्न भारत आई और अपने परिचित को लेकर पांच अक्तूबर की रात करीब 10 बजे दलेल पुरवा अनवरगंज निवासी मो. इरफान के घर पहुंची। यहां उन्हें इरफान की पहली शादी और तीन बच्चों के बारे में पता चला तो विरोध किया। इसके बाद अपने रुपये वापस मांगे तो उनके साथ मारपीट की गई। मुस्लिम धर्म कुबूल करके धर्म परिवर्तन करने और निकाह करने का दबाव बनाया गया। महिला ने विरोध किया तो इरफान और उसके पिता चांद मारपीट पर अमादा हो गए और गालियां देने लगे। उन्हें घर से भगा दिया। तब उन्हें एहसास हुआ कि इरफान ने धोखाधड़ी करके उनसे झूठी शादी की और उनके पैसे भी हड़प लिए। शारीरिक शोषण किया और धर्म परिवर्तन का नाजायज दबाव बनाया। महिला की तहरीर पर अनवरगंज पुलिस ने मो. इरफान उसके पिता चांद और पार्टनर रेहान पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। इरफान को बुधवार जेल भेज दिया गया। एसीपी मंजय सिंह ने बताया कि दोनों का आमना सामना कराया गया था तो इरफान ने शादी की बात कुबूल की है। उसने रुपयों के लेनदेन की बात भी मानी लेकिन कहा पहले उसने एक लाख थाई मुद्रा दी थी जिसके बाद 13 लाख रुपये व्यापार के सिलसिले में लिए थे। 57 लाख रुपयों के लेनदेन से उसने इंकार किया हालांकि पुलिस जांच कर रही है। एसीपी ने बताया कि महिला का मेडिकल कराया गया है। कलमबंद बयान के लिए कोर्ट भेजा गया था लेकिन वह हो नहीं सके। अब गुरुवार को पुन कोर्ट भेजा जाएगा। कानपुर के रहने वाले इरफान नाम के युवक ने पुलिस को बताया, मेरे धर्म में दो शादी जायज हैं इसीलिए थाईलैंड में अपसॉर्न से विवाह किया था। सोचा था कि बाद में उसे बता दूंगा। पर कभी नहीं सोचा था कि वह भारत आ जाएगी।

अपसॉर्न से विवाह के बाद कुछ पैसे मैंने भी दिए थे। बाद में व्यापार के सिलसिले में जरूरत पड़ी तो लिए भी। अनवरगंज पुलिस की पूछताछ में दलेल पुरवा अनवरगंज निवासी मो. इरफान ने यह बातें स्वीकार की हैं। उसके दो शादी के तर्क पर थाई महिला बोली, वह तो बौद्ध है। उसके धर्म में दो शादी नहीं होती।

मिड–डे मील की कालाबाजारी के मामले में बड़ी कार्रवाई, 40 हजार के इनामी पति–पत्नी गिरफ्तार

सीतापुर। सीतापुर में स्कूली बच्चों के निवाले में हेराफेरी और मिड–डे मील (एमडीएम) योजना के खाद्यान्न की कालाबाजारी के मामले में फरार चल रहे 20–20 हजार रुपये के इनामी पति–पत्नी अखिरकार पुलिस के हत्थे चढ़ गए। रामकोट पुलिस ने खाद्यान्न घोटाले में वांछित ठेकेदार रवि मिश्रा और उसकी पत्नी मंजू मिश्रा को गिरफ्तार किया है। दोनों लंबे समय से पुलिस की पकड़ से दूर थे। गिरफ्तारी के लिए पुलिस प्रशासन ने दोनों पर कुल 40 हजार रुपये का इनाम घोषित किया था। पुलिस के मुताबिक, रामकोट थाना क्षेत्र में मिड–डे मील योजना के तहत स्कूली बच्चों के लिए आवंटित खाद्यान्न की कालाबाजारी और हेराफेरी का मामला सामने आया था। इस प्रकरण में आरोपियों के खिलाफ रामकोट थाने में आवश्यक वस्तु अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई थी। मामले में शहर कोतवाली क्षेत्र की नई ग्वाल मंडी निवासी रवि मिश्रा और उसकी पत्नी मंजू मिश्रा वांछित चल रहे थे। पुलिस के अनुसार, दोनों की गिरफ्तारी के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे थे। लंबे समय तक गिरफ्तारी न होने पर पुलिस प्रशासन ने दोनों पर अलग–अलग 20 हजार रुपये का पुरस्कार घोषित किया था। पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल ने वांछित और पुरस्कार घोषित आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए विशेष निर्देश दिए थे। इसी क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक उत्तरी आलोक सिंह के पर्यवेक्षण और क्षेत्राधिकारी नगर विनय कुमार यादव के नेतृत्व में रामकोट पुलिस ने कार्रवाई करते हुए गुरुवार को दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पति–पत्नी की गिरफ्तारी को पुलिस खाद्यान्न हेराफेरी के मामले में महत्वपूर्ण सफलता मान रही है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि जिले में वांछित और इनामी आरोपियों के खिलाफ अभियान लगातार जारी रहेगा। आरोपी पति–पत्नी की गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम में उपनिरीक्षक लालधर प्रसाद, कांस्टेबल सोहन सिंह, रिक्रूट आरक्षी हिमांशु अवस्थी, महिला आरक्षी प्रतिभा गंगवार और रिक्रूट महिला आरक्षी दिव्या त्रिपाठी शामिल रहीं।

चिराग पासवान ने बताया कि यूपी की सभी 403 सीटों पर है तैयारी, एनडीए से गठबंधन पर क्या बोले

लखनऊ। केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने कहा कि लोजपा यूपी में विधानसभा चुनाव में सक्रिय भागीदारी निभाएगी। उनकी तैयारी सभी 403 सीटों पर है। एनडीए से गठबंधन के सवाल पर कहा कि समय आने पर जरूर बात करेंगे। उन्होंने भाजपा के सहयोगी दल के रूप में चुनाव मैदान में उतरने का इशारा भी किया। चिराग पासवान कहा कि मुख्यमंत्री ने यूपी में उनके पिता की स्मृति में पार्क बनवाने व उनकी प्रतिमा लगवाने का भरोसा दिलाया है। चिराग पासवान लोक जनशक्ति पार्टी (लोजपा) के संस्थापक राम विलास पासवान की 6वीं पुण्यतिथि पर लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। चिराग ने बिहार समेत अन्य राज्यों में उनकी पार्टी की भूमिका व भागीदारी की चर्चा करते हुए कहा कि लोजपा इसी वजह से यूपी में भी अपना विस्तार करना चाहती है। यहां उनके नेता रामविलास पासवान को मानने वाले बहुत लोग है। चुनाव आयोग के विरुद्ध विपक्ष के प्रदर्शन पर कहा कि वे समाधान नहीं चाहते,केवल हंगामा व राजनीति चाहते है। समाधान संवाद से निकलेगा। चिराग ने सपा प्रमुख अखिलेश यादव पर निशाना साधा। चिराग पासवान ने कहा कि कहा कि पीडीए के लिए अखिलेश यादव के पास राजयसभा चुनाव का अच्छा मौका था पर उन्होंने क्या संदेश दिया। पीडीए की क्या बात करते है। पुण्यतिथि कार्यक्रम में सीएम योगी, अनुप्रिया पटेल, दयाशंकर सिंह समेत कई दिग्गज नेता शामिल हुए। इससे पहले चिराग पासवान ने अपने पिता और पार्टी के संस्थापक रामविलास पासवान की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि पार्टी में उनकी भूमिका संभालने के बाद अब उन्हें एहसास होता है कि उनके पिता ने कितनी बड़ी जिम्मेदारी निभाई थीं। चिराग पासवान ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर अपने बचपन की एक तस्वीर साझा की, जिसमें वह अपनी बड़ी बहन के साथ पिता से गले मिलते नजर आ रहे हैं। उन्होंने लिखा कि पापा जी, इस भूमिका में आने के बाद मुझे समझ आता है कि आपने पार्टी, परिवार और लाखों लोगों की उम्मीदों की कितनी बड़ी जिम्मेदारी संभाली थी। इसके बावजूद आपके पास दीदी और मेरे लिए हमेशा समय होता था। उन्होंने कहा कि काश, मैं एक बार फिर आपको गले लगा पाता। आपकी बहुत याद आती है, पापा जी। प्रमुख दलित नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री रामविलास पासवान का आठ अक्टूबर, 2020 को नयी दिल्ली में 74 वर्ष की आयु में निधन हो गया था। उन्होंने 2000 में लोक जनशक्ति पार्टी की स्थापना की थी और वह इसके संस्थापक अध्यक्ष थे।

चाय बनाने में देरी हुई तो जलते गैस चूल्हे पर पत्नी का मुंह रख झुलसाया, पति की हैवानियत

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के शामली में एक पति की हैवानियत सामने आई है। चाय बनाने में देरी हुई तो जलते गैस चूल्हे पर पत्नी का मुंह रख झुलसा दिया। चाय के लिए खौल रहा पानी भी पत्नी पर डाल दिया। गंभीर रूप से झुलस गई पीड़िता को जिला अस्पताल रेफर किया गया है। उत्तर प्रदेश के शामली जिले में चौसाना क्षेत्र के एक गांव में गुरुवार को दिल दहला देने वाली घटना सामने आई। चाय बनाने में जरा सी देर क्या हुई पति पर हैवानियत सवार हो गई। पत्नी के साथ मारपीट करते हुए उसका मुंह जलते हुए गैस चूल्हे पर रख दिया। चाय के लिए खौल रहा पानी भी पत्नी पर डाल दिया। गंभीर रूप से झुलस गई पीड़िता को जिला अस्पताल रेफर किया गया है। पीड़िता के पिता ने पुलिस को तहरीर दी लेकिन आरोप है कि दो दिनों तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। अब पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया है। पीड़िता इमराना के पिता लियाकत ने बताया कि बेटी इमराना की शादी 20 वर्ष पहले भड़ी निवासी अफलातून के साथ हुई थी। दंपति के दो बच्चे हैं। बताया कि पांच अक्टूबर की सुबह करीब 10 बजे इमराना घर में चाय बना रही थी। चाय बनाने कुछ देर हो गई, इस पर अफलातून आगबबूला हो गया। उसने इमराना के साथ गाली–गलौज कर दी। इमराना ने विरोध किया तो उसे थप्पड़ मार दिया। आरोप है कि विवाद बढ़ने पर अफलातून ने इमराना की गर्दन पकड़कर उसका मुंह जलते हुए गैस चूल्हे पर रख दिया। इसके बाद चूल्हे पर रखी चाय के लिए रखा खौलता पानी भी पत्नी इमराना के ऊपर डाल दिया। घटना में इमराना गंभीर रूप से झुलस गई। आनन×फानन में इमराना को ऊन के सरकारी अस्पताल पहुंचाया गया जहां हालत गंभीर होने पर उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। इमराना के पिता लियाकत का आरोप है कि अफलातून पांच साल से इमराना को परेशान कर रहा था।

मेडिकल कॉलेज में पूर्व सांसद से धक्का-मुक्की, गार्ड से भिड़ गईं पत्नी

कानपुर देहात। यूपी के कानपुर देहात में गुरुकुल के बीमार बच्चों का इलाज कराने बुधवार को मेडिकल कॉलेज पहुंचे पूर्व सांसद अनिल शुक्ल वारसी के लाइन में लगकर पर्चा बनवाते समय एक गार्ड से धक्कामुक्की हो गई। आरोप है कि मौके पर मौजूद गार्ड की पत्नी ने उनके साथ बदसलूकी की। दोनों के बीच तीखी नोकझोंक का वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। हालांकि लाइव हिन्दुस्तान वायरल वीडियो की पुष्टि नहीं करता है। उधर, मामले के तूल पकड़ने पर मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य ने गार्ड को 10 दिन के लिए निलंबित कर जांच के लिए एक समिति गठित की है। राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला के पति और पूर्व सांसद अनिल शुक्ल वारसी बुधवार सुबह अपने गुरुकुल के कुछ बीमार बच्चों को लेकर इलाज कराने मेडिकल कॉलेज गए थे। यहां रजिस्ट्रेशन काउंटर पर लगी लंबी लाइन देख वह भी लाइन में खड़े हो गए। इसी बीच कुछ कर्मियों ने उनको लाइन में लगा देख अलग से पर्चा बनवाने का आग्रह किया लेकिन उन्होंने मना कर दिया। आरोप है कि इसी बीच एक गार्ड ने उन्हें धक्का दे दिया। उनके नाराजगी जताने पर गार्ड और उसकी पत्नी अपशब्द बोलने लगे। पूर्व सांसद अनिल शुक्ल वारसी ने पंजीकरण में लंबी लाइन लगने से तमाम मरीजों के ओपीडी के समय तक पर्चा नहीं बनने और बड़ी संख्या में डॉक्टरों की तैनाती के बावजूद अधिकांश के फर्जी हाजिरी लगाने के आरोप लगाए। 11 बजे तक लाइन में लगने के बाद भी पर्चा नहीं बनवा पाए। डिप्टी सीएम से शिकायत करेंगे। मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉक्टर अंबरीष गुप्ता ने प्रथम दृष्टया गार्ड की गलती सामने आने पर उसे 10 दिन के लिए सस्पेंड कर दिया। प्राचार्य ने बताया कि गार्ड और उसकी पत्नी की भूमिका की जांच कराएंगे। सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो शासन को भेजें जाएंगे। डॉक्टरों के नदारद के आरोप को निराधार बताया। बॉयोमीट्रिक हाजिरी लग रही है। कानपुर देहात में गुरुकुल के बीमार बच्चों का इलाज कराने बुधवार को मेडिकल कॉलेज पहुंचे पूर्व सांसद अनिल शुक्ल वारसी के लाइन में लगकर पर्चा बनवाते समय एक गार्ड से धक्कामुक्की हो गई। आरोप है कि मौके पर मौजूद गार्ड की पत्नी ने उनके साथ बदसलूकी की।

सुरक्षा गार्ड के धक्का देने के बाद विवाद बढ़ा तो गार्ड की पत्नी आगे आ गई। वायरल वीडियो में गार्ड की पत्नी के गाली देने के बाद पूर्व सांसद अनिल वारसी यह कहते नजर आये कि तुझको तेरे बेटों के साथ मारुंगा। हालांकि बाद में मौजूद लोगों ने दोनों को अलग किया।

मायके से वापस आई पत्नी की सिर में ईंट मारकर हत्या, फिर बच्चों को लेकर फरार हो गया पिता

बरेली। बरेली के जिले के जोगीनवादा में गुरवार को पारिवारिक विवाद के बाद पति ने पत्नी के सिर में ईंट मारकर हत्या कर दी। वारदात के बाद आरोपी पति तीन वर्षीय बेटी को लेकर फरार हो गया। वहीं 13 और 15 वर्षीय दो बेटों के भी लापता होने से आशंका जताई जा रही है कि आरोपी उन्हें भी अपने साथ ले गया है। पुलिस उसकी तलाश में दबिश दे रही है। जोगीनवादा हनुमान मूर्ति वाली गली निवासी 39 वर्षीय सरोज की शादी सतीश राठौर से हुई थी। पुलिस के मुताबिक पति–पत्नी के बीच अक्सर पारिवारिक विवाद होता था। सरोज दो–तीन दिन पहले ही मायके से वापस आई थी। गुरुवार को दोनों के बीच फिर विवाद हुआ। इसी दौरान सतीश ने ईंट से सरोज के सिर पर प्रहार कर दिया। गंभीर चोट लगने से उसकी मौत हो गई। हत्या के बाद सतीश अपनी तीन वर्षीय बेटी वंदना को लेकर घर से फरार हो गया। वहीं उसके दो अन्य बच्चे 13 वर्षीय लखन और 15 वर्षीय राजेश भी नहीं मिले। पुलिस उनके बारे में जानकारी जुटा रही है। आशंका है कि सतीश दोनों बेटों को भी अपने साथ ले गया है। सूचना पर बारादरी पुलिस के साथ पुलिस अधिकारी और फील्ड यूनिट मौके पर पहुंची। फॉरेंसिक टीम ने घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए। मायके वालों की मौजूदगी में शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया। पुलिस आरोपी की गिरफ्तारी के लिए संभावित ठिकानों पर दबिश दे रही है। पुलिस का कहना है कि तहरीर मिलने पर मुकदमा दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जाएगी। वहीं दूसरी ओर एक दिन पहले मीरगंज के गहवरा गांव में एक महिला की हत्या का मामला सामने आया है। लखीमपुर खीरी के पलिया निवासी अंजू की शादी करीब छह साल पहले गहवरा गांव के जयदेव से हुई थी। अंजू अपने पिता के साथ उत्तराखंड के रुद्रपुर में रहकर नौकरी करती थी। मंगलवार शाम ही वह गहवरा स्थित अपनी ससुराल पहुंची थी। रात में किसी बात को लेकर उसका पति से विवाद हो गया। आरोप है कि विवाद के दौरान जयदेव ने अंजू के सिर पर सिलबट्टा मार दिया। घायल होने के बाद उसका गला दबाकर हत्या कर दी गई। इसके बाद शव को ठिकाने लगाने के लिए परिजन और कुछ लोग उसे रामगंगा किनारे ले गए। वहां लकड़ियों और उपलों से चिता तैयार कर अंतिम संस्कार शुरू कर दिया गया। इसी बीच किसी व्यक्ति ने पुलिस को सूचना दे दी। सूचना मिलते ही डायल 112 और थाना प्रभारी रवि कुमार पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस को वहां चिता जलती मिली। पुलिसकर्मियों ने पानी डालकर आग बुझाई और चिता से शव बाहर निकलवाया। पुलिस के पहुंचने से पहले ही मौके पर मौजूद लोग भाग गए। शव का कुछ चेहरा और बाल झुलस गए थे। मामले की गंभीरता को देखते हुए सीओ अजय कुमार भी मौके पर पहुंचे। फील्ड यूनिट ने रात में ही मृतका के घर की जांच की। पुलिस को मकान की छत पर छिपाकर रखा गया सिलबट्टा मिला, जिस पर खून के निशान पाए गए हैं।

अयोध्या से चुनाव लड़कर दिखाएं मुख्यमंत्री, पवन पांडेय की कथा में पहुंचे अखिलेश का योगी को चैलेंज

लखनऊ। अयोध्या में सपा प्रत्याशी पवन पांडेय की कथा शामिल होने पहुंचे समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव ने मुख्यमंत्री को चुनौती दे डाली। योगी का बिना नाम लिए अखिलेश यादव ने कहा कि बड़े–बड़े दावे करने वाले मुख्यमंत्री अगर अयोध्या को लेकर इतना ही आश्वस्त हैं तो खुद अयोध्या से चुनाव लड़कर दिखाएं। अखिलेश यादव ने कहा कि जनता दूध का दूध–पानी का पानी कर देगी। अखिलेश यादव ने कहा कि जब से हमने अयोध्या में प्रत्याशी घोषित किया है, बीजेपी सर्वे पर सर्वे करा रही है। हर सर्वे में बीजेपी पीछे छूट जा रही है। सुनने में आ रहा है कि अयोध्या में बीजेपी को नया प्रत्याशी ही नहीं मिल पा रहा है। जो बड़े–बड़े दावे करने वाले मुख्यमंत्री इतने ही आश्वस्त हैं।

उत्तर पश्चिम रेलवे

ई–निविदा आमन्त्रण सूचना

मंडल रेल प्रबन्धक, इंजीनियरिंग, उत्तर पश्चिम रेलवे, जोधपुर द्वारा भारत के राष्ट्रपति के लिये एवं उनकी ओर से ई–निविदा के माध्यम से प्रचलित नियमों के अन्तर्गत निर्धारित प्रपत्रों में निविदा निम्न कार्यों के लिए क्रमानुसार आमंत्रित की जाती है– ई– निविदा सूचना सं० 2026–27 : 152 of 2026–27 कार्य का नाम व स्थान : Samdari-Barmer Increasing Sleeper Density-128.104 T Km. अनुमानित लागत रूपये : 205106200. 66 बयाने की राशि रूपये : 4102100.00 निविदा सूचना संख्या 152of2026-27 (निविदा प्रस्तुत करने की तिथि 30.10.2026 को 15:00 बजे तक है। वेबसाइट का विवरण जहाँ पर ई–निविदा देखी व भरी जा सकती है– www.ireps.gov.in 1445-DE/26

हमें NWRailways @NWRailways_ पर फॉलो करें

उत्तर पश्चिम रेलवे

ई–निविदा आमन्त्रण सूचना

मंडल रेल प्रबन्धक, इंजीनियरिंग, उत्तर पश्चिम रेलवे, जोधपुर द्वारा भारत के राष्ट्रपति के लिये एवं उनकी ओर से ई–निविदा के माध्यम से प्रचलित नियमों के अन्तर्गत निर्धारित प्रपत्रों में निविदा निम्न कार्यों के लिए क्रमानुसार आमंत्रित की जाती है– ई– निविदा सूचना सं० : 160 of 2026-27 कार्य का नाम व स्थान : Raikabagh-Jaisalmer : CTR(P)-68.595 Tkm by Contractors own PQRS/SQRS/track laying equipment under ADEN/JSM Jurisdiction. अनुमानित लागत रूपये : 26,84,13,272.48 बयाने की राशि रूपये : 53,68,300.00 निविदा सूचना संख्या 160of2026-27 (निविदा प्रस्तुत करने की तिथि 16.10.2026 को 15:00 बजे तक है। वेबसाइट का विवरण जहाँ पर ई–निविदा देखी व भरी जा सकती है – www.ireps.gov.in 1444-DE/26

हमें NWRailways @NWRailways_ पर फॉलो करें

अभिनय का दमदार सितारा खामोश

भारतीय सिनेमा ने एक ऐसा कलाकार खो दिया, जिसकी पहचान सिर्फ उसके निभाए किरदारों से नहीं, बल्कि उसकी आवाज, तेवर और अभिनय की उस खास शैली से थी, जिसे पर्दे पर देखते ही दर्शक पहचान लेते थे। नाना पाटेकर अब हमारे बीच नहीं हैं। 75 वर्ष की उम्र में गोवा में कार्डियक अरेस्ट के बाद उनका निधन हो गया। डॉक्टरों ने उन्हें बचाने की करीब 45 मिनट तक कोशिश की, लेकिन उन्हें बचाया नहीं जा सका।

नाना पाटेकर का असली नाम विश्वनाथ पाटेकर था। महाराष्ट्र में जन्मे नाना ने अपने अभिनय सफर की शुरुआत मराठी रंगमंच से की और आगे चलकर हिंदी तथा मराठी फिल्मों में अपनी अलग पहचान बनाई। उनका अभिनय पारंपरिक नायक की छवि तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने पुलिस अधिकारी, सैनिक, अपराधी, आम आदमी और व्यवस्था से जूझते किरदारों को ऐसी जीवंतता दी कि वे पर्दे के किरदार न रहकर लोगों की स्मृति का हिस्सा बन गए।

'परिंदा', 'प्रहार', 'तिरंगा', 'क्रांतिवीर' और 'खामोशी' जैसी फिल्मों में उनके अभिनय ने दर्शकों और आलोचकों दोनों को प्रभावित किया। 'क्रांतिवीर' का उनका तेवर और संवाद अदायगी आज भी सिनेमा प्रेमियों के बीच याद की जाती है। वहीं मराठी सिनेमा में 'नटसम्राट' जैसी फिल्मों ने उनके अभिनय की गहराई को नई ऊंचाई दी। उनके अभिनय की खासियत यह थी कि वे संवाद को सिर्फ बोलते नहीं थे, उसे जीते थे। नाना पाटेकर की आवाज में एक अलग

किस्म की खनक थी। गुस्सा हो, दर्द हो, व्यंग्य हो या भावुकता—हर भावना को वे अपनी आवाज और चेहरे के भावों से बेहद प्रभावशाली ढंग से सामने रखते थे। यही वजह थी कि छोटे से छोटा संवाद भी उनके मुंह से निकलकर यादगार बन जाता था।

लेकिन नाना की कहानी केवल फिल्मों तक सीमित नहीं थी। उन्होंने सामाजिक सरोकारों से भी खुद को जोड़े रखा। किसानों और ग्रामीण समुदायों के लिए किए गए उनके काम और 'नाम फाउंडेशन' से जुड़ी उनकी सामाजिक पहल ने उनके व्यक्तित्व के एक दूसरे पक्ष को सामने रखा। पर्दे पर कठोर और बेबाक नजर आने वाला यह कलाकार वास्तविक जीवन में जरूरतमंदों की मदद के लिए भी जाना गया।

नाना पाटेकर को तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों सहित कई प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा गया। उन्हें पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया। करीब पांच दशक लंबे करियर में उन्होंने यह साबित किया कि महान अभिनेता बनने के लिए सिर्फ चेहरे की चमक नहीं, बल्कि किरदार में उतरने का जुनून चाहिए।

उनका जाना भारतीय सिनेमा के लिए एक बड़ी क्षति है। उनके किरदार, उनकी आवाज और उनके संवाद आने वाली पीढ़ियों तक याद किए जाते रहेंगे। नाना पाटेकर का पर्दे से विदा होना एक कलाकार का अंत जरूर है, लेकिन उनके अभिनय की विरासत का नहीं।

नाना पाटेकर चले गए, मगर उनकी आवाज और अभिनय की गूंज लंबे समय तक भारतीय सिनेमा में सुनाई देती रहेगी।

'दर्द आदमी को भी होता है'

हिंदी सिनेमा में कुछ अभिनेता ऐसे होते हैं, जो पर्दे पर केवल किरदार नहीं निभाते, बल्कि उस किरदार में अपनी पूरी आत्मा उतार देते हैं। नाना पाटेकर उन्हीं अभिनेताओं में से एक हैं। उनका अभिनय चमक-दमक और बनावटी नायकत्व से अलग है। उनकी आवाज में खुरदुरापन है, चेहरे पर जीवन की कठोरता दिखाई देती है और संवाद बोलने का अंदाज ऐसा कि साधारण-सा वाक्य भी दर्शक के भीतर उतर जाता है।

नाना पाटेकर ने हिंदी सिनेमा में खलनायक, पुलिस अधिकारी, सैनिक, किसान, आम आदमी, पत्रकार और संघर्षशील व्यक्ति जैसे अनेक चरित्र निभाए। लेकिन उनके अभिनय की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि उन्होंने हर किरदार में मनुष्य की पीड़ा को जगह दी। उनका अभिनय बताता है कि पुरुष भी टूटता है, रोता है, डरता है और भीतर से घायल होता है। शायद इसीलिए उनके अभिनय को एक पंक्ति में कहा जा सकता है—दर्द मर्द को भी होता है।

नाना पाटेकर का जन्म 1 जनवरी 1951 को महाराष्ट्र के मुरुड-जंजीरा में हुआ। उनका वास्तविक नाम विश्वनाथ पाटेकर है। अभिनय की दुनिया में आने से पहले उन्होंने विज्ञापन और रंगमंच से अपने सफर की शुरुआत की। रंगमंच ने उन्हें अभिनय की वह गहराई दी, जिसने आगे चलकर उन्हें हिंदी सिनेमा के सबसे प्रभावशाली अभिनेताओं में शामिल किया।

उनकी शुरुआती फिल्मों में गमन, आज की आवाज, अंकुश और प्रतिघात जैसी फिल्में महत्वपूर्ण रहीं। लेकिन परिंदा ने उनके अभिनय को राष्ट्रीय स्तर पर एक अलग पहचान दी। इस फिल्म में उनके हिंसक और मानसिक रूप से जटिल किरदार ने दर्शकों को भीतर तक झकझोर दिया। इसके लिए उन्हें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी मिला।

इसके बाद क्रांतिवीर ने नाना पाटेकर को आम आदमी की आवाज बना दिया। फिल्म में उनका किरदार व्यवस्था, भ्रष्टाचार और सामाजिक अन्याय से लड़ता है। उनका संवाद बोलने का अंदाज इतना प्रभावशाली था कि कई संवाद आज भी लोकप्रिय संस्कृति का हिस्सा हैं।

नाना पाटेकर की खासियत केवल गंभीर भूमिकाओं तक सीमित नहीं रही। अग्निसाक्षी, खामोशीः द म्यूजिकल, यशवंत, अब तक छप्पन, अपहरण, वेलकम, राजनीति और नटसम्राट जैसी फिल्मों में उन्होंने अपने अभिनय के अलग-अलग रंग दिखाए।

खामोशी में उनका संयमित और भावनात्मक अभिनय दर्शाता है कि बिना बहुत कुछ कहे भी अभिनेता दर्शक तक अपनी बात पहुंचा सकता है। वहीं अब तक छप्पन में पुलिस अधिकारी का उनका किरदार कठोरता और भीतर छिपे अकेलेपन का मिश्रण था।

वेलकम में वही नाना पाटेकर हास्य के रंग में दिखाई दिए। उदय शेट्टी का किरदार आज भी उनके सबसे लोकप्रिय कॉमिक पात्रों में गिना जाता है। उन्होंने साबित किया कि गंभीर और आक्रामक अभिनेता होने के बावजूद कॉमेडी में भी उनकी टाइमिंग उतनी ही प्रभावी हो सकती है। लेकिन नाना पाटेकर की पहचान केवल अभिनेता के रूप में नहीं है। वह सामाजिक सरोकारों से जुड़े कलाकार भी रहे हैं। किसानों और ग्रामीण जीवन से जुड़े मुद्दों पर उनकी सक्रियता चर्चा में रही है। उन्होंने किसानों की समस्याओं को करीब से समझने और उनकी मदद करने के लिए सामाजिक स्तर पर काम किया। उनका मानना रहा है कि प्रसिद्धि का वास्तविक अर्थ तभी है जब उसका इस्तेमाल समाज के कमजोर वर्ग के लिए किया जाए।

सैनिकों के प्रति उनका सम्मान भी

> दर्द केवल कमजोर को नहीं होता। दर्द उस आदमी को भी होता है जो दुनिया के सामने मजबूत दिखाई देता है। और नाना पाटेकर ने इसी अदृश्य दर्द को पर्दे पर आवाज दी है।

विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है। वह सैनिकों के बीच गए, उनके साथ समय बिताया और उनके जीवन की कठिनाइयों को करीब से समझने का प्रयास किया। सीमा पर तैनात जवानों के जीवन को केवल फिल्मों में निभाने के बजाय उनके वास्तविक जीवन के संघर्ष को समझना उनके सामाजिक सरोकारों का महत्वपूर्ण पक्ष है। यही कारण है कि उनके लिए सैनिक केवल फिल्म का किरदार नहीं, बल्कि देश के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाला वास्तविक नायक है।

नाना पाटेकर ने निर्देशन और लेखन में भी हाथ आजमाया। प्रहारः द फाइनल अटैक उनके निर्देशन की उल्लेखनीय फिल्म रही। इस फिल्म में उन्होंने सेना के अनुशासन, युद्ध और सैनिक के मनोविज्ञान को गंभीरता से प्रस्तुत किया।

नाना के 6 प्रसिद्ध संवाद

- "धंधे में कोई किसी का भाई नहीं, कोई किसी का बेटा नहीं" — 'परिंदा' (1989)
- "आ गए मेरी मौत का तमाशा देखने" — 'क्रांतिवीर' (1994)
- "बता इसमें मुसलमान का खून कौन सा और हिंदू का कौन सा?" — 'क्रांतिवीर'
- "सौ में से अस्सी बेईमान, फिर भी मेरा देश महान" — 'क्रांतिवीर'
- "मौत से बढ़कर कोई दोस्त नहीं है" — 'गुलाम-ए-मुस्तफा' (1997)
- "हम सब सिस्टम का हिस्सा हैं, सिस्टम डिसाइड करता है, अपन फॉलो करता है" — 'अब तक छप्पन' (2004)

दूसरा नाना पाटेकर नहीं होगा

नाना पाटेकर का जाना एक व्यक्तिगत आघात सा लगा। उन जैसा असाधारण अभिनेता होना कठिन है। सिने पर्दे पर पहली बार लोगों ने ऐसा अभिनेता देखा था जिसने अनुभूतियों के घनत्व को इतना गहरा कर दिया था कि उन्हें किरदार में देख मन सुन्न हो जाता था। प्रहार परिन्दा का नाना आज भी लोगों के दिलों में ज़िंदा है।

अभिनय की उनकी खुद की अपनी एक धारदार मौलिक शैली थी जो उनसे पहले पर्दे पर देखी नहीं थी। गहरी और पैनी अभिनय शैली। उनकी संवाद अदायगी, उनका देखना गर्दन मोड़ना सब मौलिक। नाना पाटेकर एक थे एक ही रहेंगे। उनसे पहले न कोई नाना हुआ न बाद में होगा। नाना के किरदारों में यह बुलंदी इसलिए आती थी क्योंकि वे निजी जीवन में बेहद बुलंद और शानदार इंसान थे। जीवन का सबसे विलक्षण पक्ष यही था, उनका फिल्मी कैरियर से इतर जीवन। नाना पाटेकर भारतीय सेना (टेरिटोरियल आर्मी) में थे और लेफ्टिनेंट कर्नल के पास से रिटायर हुए थे। कारगिल युद्ध के समय उन्होंने द्रास कुपवाड़ा बारामूला श्रीनगर जैसी चुनौती पूर्ण स्थलों पर भारत की सेवा की।

वो पहले अभिनेता थे जो पुणे में गाँव में रह कर खेती करते थे और सिर्फ अभिनय के लिए मुंबई आते थे। मैने एक इंटरव्यू में सुना कि नाना पाटेकर अपने घर का दरवाजा गांव वालों के लिए कभी बंद नहीं करते थे। उनकी कमाई गांव के लिए गांव में रहने वाले के लिए थी। ऐसे लोग अब नहीं आयेंगे।

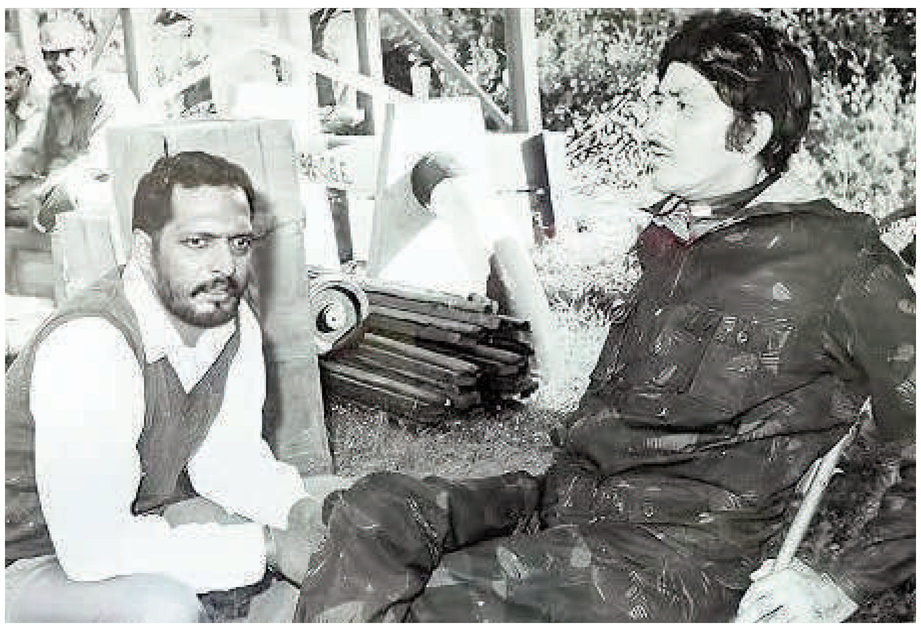

नाना पाटेकर को राष्ट्रीय और फिल्म जगत के कई बड़े सम्मान मिले

- **3 राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार —**
  परिंदा (1989) — सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता
  क्रांतिवीर (1994) — सर्वश्रेष्ठ अभिनेता
  अग्निसाक्षी (1996) — सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता

पद्मश्री (2013) — भारतीय सिनेमा और कला में योगदान के लिए।

फिल्मफेयर पुरस्कार — परिंदा, अंगार, क्रांतिवीर और अपहरण के लिए अलग-अलग श्रेणियों में।

फिल्मफेयर मराठी पुरस्कार — डॉ. प्रकाश बाबा आमटे: द रियल हीरो के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (2015)।

आईफा अवॉर्ड — अपहरण के लिए सर्वश्रेष्ठ नकारात्मक भूमिका।

स्क्रीन अवॉर्ड — क्रांतिवीर और अपहरण जैसी फिल्मों के लिए।

जी सिने अवॉर्ड — अपहरण के लिए नकारात्मक भूमिका की श्रेणी में।

जी गौरव अवॉर्ड (2016) — नटसम्राट के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता।

पर्दे के नटसम्राट, खेतों का अपना किसान

कुछ लोग चले जाते हैं, लेकिन उनकी आवाज लंबे समय तक सुनाई देती रहती है। कुछ चेहरे पर्दे से उतरकर सीधे लोगों की स्मृतियों में बस जाते हैं। नाना पाटेकर भी ऐसे ही कलाकार थे। उनके निधन की खबर ने भारतीय सिनेमा को स्तब्ध कर दिया। 75 वर्ष की उम्र में उन्होंने दुनिया को अलविदा कह दिया, लेकिन पीछे छोड़ गए अभिनय की ऐसी विरासत, जिसे आने वाली पीढ़ियां लंबे समय तक याद रखेंगी।हालांकि नाना पाटेकर की कहानी सिर्फ फिल्मों, पुरस्कारों और यादगार किरदारों की कहानी नहीं थी। उनके व्यक्तित्व का एक बड़ा हिस्सा उन किसानों और ग्रामीण परिवारों के साथ जुड़ा था, जिनके घरों में कभी चूल्हा बुझ गया था, जिनके आंगन से कमाने वाला सदस्य चला गया था और जिनके बच्चों की आंखों में भविष्य के सपनों की जगह भूख और बेबसी दिखाई देती थी।

नाना ने पर्दे पर जिंदगी के तमाम रंग निभाए, लेकिन जिंदगी के आखिरी वर्षों में उन्होंने संवाद कम और काम ज्यादा किया। किसान की पीड़ा पर केवल संवेदना व्यक्त करने के बजाय वे गांवों तक पहुंचे। किसी विधवा की मजबूरी सुनकर सिर्फ सांत्वना देने के बजाय उसके परिवार को दोबारा खड़ा करने की कोशिश की। यही वजह है कि उनके जाने का दर्द सिर्फ फिल्मी दुनिया तक सीमित नहीं रहा, बल्कि गांवों तक महसूस किया गया।

● **वह शाम, जिसने बदल दी जिंदगीः** साल 2015 नाना पाटेकर के जीवन में एक निर्णायक मोड़ लेकर आया। वर्षों की मेहनत और अभिनय से कमाई गई रकम से वह अपने लिए एक महंगी लग्जरी कार खरीदने की सोच रहे थे। लेकिन टेलीविजन पर दिखाई गई एक खबर ने उनके भीतर का इंसान झकझोर दिया।

महाराष्ट्र के सूखाग्रस्त इलाके में एक किसान ने आत्महत्या कर ली थी। स्क्रीन पर उसका परिवार था। पत्नी विधवा हो चुकी थी, बच्चे पिता से वंचित हो गए थे और बूढ़े माता-पिता ने अपना बेटा खो दिया था। सबसे ज्यादा विचलित करने वाली बात उन चेहरों पर दिखाई दे रही भूख और बेबसी थी।

● **नाना उस दृश्य को देखते रहे।**

जिस पैसे से वे एक महंगी कार खरीदने वाले थे, उसके सामने उन्हें एक पूरा परिवार दिखाई देने लगा। सवाल उनके भीतर उठने लगा—जब इतने लोगों के पास दो वक्त का भोजन नहीं है, तब सिर्फ अपने लिए इतनी बड़ी रकम खर्च करने का क्या अर्थ है?

● **यहीं से एक अभिनेता के भीतर का इंसान जागा।**

उन्होंने बाद में इस घटना को याद करते हुए बताया था कि उस खबर ने उनकी सोच बदल दी। लग्जरी कार का सपना धीरे-धीरे किसानों की मदद के संकल्प में बदल गया।

● **पहले पैसा बांटना चाहते थे, फिर समझ आया असली दर्द**

नाना ने अपने साथी कलाकार मकरंद अनासपुरे से बात की। शुरुआती विचार था कि आत्महत्या करने वाले किसानों के परिवारों को तत्काल आर्थिक सहायता दी जाए। लेकिन मकरंद ने उन्हें सलाह दी कि केवल पैसा बांटने के बजाय पहले खुद जाकर वहां के हालात देखें। नाना बीड़ पहुंचे वहां उन्होंने जो देखा, उसने उन्हें भीतर तक हिला दिया। सैकड़ों महिलाएं थीं। किसी ने अपना पति खोया था, किसी ने परिवार का कमाने वाला सदस्य। किसी की गोद में बच्चा था तो किसी बच्चे के सिर से पिता का साया उठ चुका था। यह सिर्फ आर्थिक संकट नहीं था। यह उन परिवारों की कहानी थी, जिनकी पूरी जिंदगी एक झटके में बिखर गई थी।

नाना वहां मदद बांटने के इरादे से पहुंचे थे, लेकिन लौटते समय उनके सामने एक बड़ा सवाल था—क्या किसी परिवार को एक बार पैसा दे देने से उसकी जिंदगी बदल जाएगी?

● **'नाम' बना उम्मीद का नाम**

2015 में नाना पाटेकर और मकरंद अनासपुरे ने मिलकर नाम फाउंडेशन की शुरुआत की। उद्देश्य था महाराष्ट्र के सूखाग्रस्त इलाकों में किसानों और उनके परिवारों को संकट से उबारना। शुरुआत आर्थिक सहायता से हुई, लेकिन जल्द ही नाना को समझ आया कि समस्या की जड़ कहीं ज्यादा गहरी है।

पानीः पानी नहीं होगा तो खेत सूखेंगे। खेत सूखेंगे तो फसल नहीं होगी। फसल नहीं होगी तो किसान कर्ज में डूबेगा। कर्ज बढ़ेगा तो परिवार पर संकट आएगा और उम्मीद टूटने पर हालात आत्महत्या तक पहुंच सकते हैं।

इसलिए केवल राहत बांटने के बजाय समस्या की जड़ पर काम करने का रास्ता चुना गया। नाम फाउंडेशन के जरिए जल संरक्षण, नदियों और नालों की सफाई व गहरीकरण, खेत-तालाब और जल संचयन जैसे कामों पर जोर दिया गया। उद्देश्य था कि किसान को ऐसा सहारा मिले, जिससे वह अगली फसल अपने दम पर उगा सके। नाना का नजरिया दान देने वाले व्यक्ति का नहीं था। वह चाहते थे कि किसान मदद का इंतजार करने के बजाय अपने पैरों पर खड़ा हो।

● **दुआओं की सबसे बड़ी पूंजीः** इस मिशन की खासियत यह भी रही कि नाना ने इसे केवल बड़े उद्योगपतियों या संपन्न लोगों के भरोसे नहीं छोड़ा। आम लोगों ने भी अपनी क्षमता के अनुसार योगदान दिया। किसी ने बड़ी रकम दी तो किसी ने छोटी। लेकिन छोटी-छोटी मदद मिलकर एक बड़ा सहारा बनती गई। फिल्मों में उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार मिले, पद्मश्री मिला और करोड़ों प्रशंसकों का प्यार मिला। लेकिन किसी किसान परिवार की आंखों में लौटती उम्मीद उनके लिए किसी सम्मान से कम नहीं थी। प्राकृतिक आपदाओं और कोरोना महामारी जैसे कठिन समय में भी राहत कार्यों से उनका जुड़ाव बना रहा।

भारतीय टीम में बने रहने के लिए यशस्वी जायसवाल सीख रहे नई स्किल, मुंबई कप्तान सिद्धेश लाड ने खोला राज

नई दिल्ली। मुंबई के कप्तान सिद्धेश लाड ने गुरुवार को बताया कि भारत के सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल बल्लेबाजी और लेग-स्पिन के अलावा बैक-अप कौशल के रूप में विकेटकीपिंग पर काम कर रहे हैं। रणजी ट्रॉफी 2026-27 सत्र से पहले जायसवाल की विकेटकीपिंग पर कड़ी मेहनत करते हुए तस्वीरें सामने आई हैं। यह 24 वर्षीय खिलाड़ी भारतीय टीम के नेट में लेग-स्पिन का भी अभ्यास करता है और कुछ मुकाबलों में गेंदबाजी भी कर चुका है। जायसवाल रविवार से चंडीगढ़ के खिलाफ वानखेड़े स्टेडियम में शुरू होने वाले मुंबई के रणजी ट्रॉफी के शुरुआती मैच के लिए उपलब्ध रहेंगे। लेकिन राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं के कारण वह दूसरे मैच से आगे उपलब्ध नहीं रहेंगे। लाड ने मुंबई की सत्र पूर्व प्रेस कांफ्रेंस में पीटीआई के एक सवाल के जवाब में कहा, वह ऐसे खिलाड़ी हैं जिन्होंने विकेटकीपिंग का अभ्यास शुरू किया है क्योंकि उन्हें लगता है कि वह अपने खेल में कुछ और जोड़ना चाहते हैं। उन्होंने कहा, मुझे नहीं पता कि उनका इरादा क्या है लेकिन अभी वह विकेटकीपिंग का अभ्यास कर रहे हैं और अगर वह अभ्यास करते रहेंगे तो वह इसके आदी हो जाएंगे। पता चला है कि रणजी ट्रॉफी से पहले मुंबई के एक अभ्यास मैच के दौरान जायसवाल ने करीब 10 ओवर तक विकेटकीपिंग की थी। रणजी ट्रॉफी के शुरुआती मुकाबले के लिए मुंबई की टीम में भारत के बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल और सरफराज खान के अलावा शम्स मुलानी और तुषार देशपांडे भी शामिल हैं। ये खिलाड़ी हाल में ऑस्ट्रेलिया ए के खिलाफ अनौपचारिक टेस्ट सीरीज में भारत ए की 1-0 से जीत का हिस्सा थे भारतीय टीम में बने रहने के लिए यशस्वी जायसवाल की तरह अन्य खिलाड़ियों को भी अपने मजबूत पक्ष के लिए अन्य स्किल पर काम करना पड़ रहा है क्योंकि टीम के अंदर ही एक स्थान के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा है। सीनियर टीम के उपकप्तान केएल राहुल, सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल और मध्यक्रम के बल्लेबाज देवदत्त पडिक्कल समेत 11 टेस्ट खिलाड़ियों को न्यूजीलैंड ए के खिलाफ तीन अनौपचारिक टेस्ट मैचों के लिए भारत ए की 15 सदस्यीय टीम में शामिल किया गया है। भारत ए और न्यूजीलैंड ए के बीच पहला चार दिवसीय मुकाबला 24 से 28 अक्टूबर तक लिंकन में खेला जाएगा। दूसरा मैच 31 अक्टूबर से तीन नवंबर तक क्राइस्टचर्च में और तीसरा मुकाबला सात से 10 नवंबर तक फिर लिंकन में होगा। बीसीसीआई की संक्षिप्त विज्ञप्ति में यह साफ नहीं किया गया है कि राहुल, जायसवाल और वॉशिंगटन सुंदर जैसे खिलाड़ी तीनों अनौपचारिक टेस्ट में से कितने मैच खेलेंगे। ये खिलाड़ी भारतीय वनडे टीम का भी हिस्सा हैं और न्यूजीलैंड के खिलाफ वनडे सीरीज के मैच चार, सात और 10 नवंबर को होनी है। ऐसे में उनके लिए भारत ए के सभी मुकाबलों में खेलना संभव नहीं होगा। भारत ए टीम- यशस्वी जायसवाल, लोकेश राहुल, देवदत्त पडिक्कल, रविचंद्रन स्मरण, ऋषभ पंत, ध्रुव जुरेल (कप्तान), वाशिंगटन सुंदर, आकिब नबी, आकाश दीप, अंशुल कंबोज, मानव सुथार, मुकेश चौधरी, साई सुदर्शन, यश राठौड़ और मुकेश कुमार।

एक नज़र

डीडीए का फैसला; दिल्ली के 45 झुग्गी क्लस्टर्स का होगा पुनर्वास, मिलेंगे पक्के मकान

नई दिल्ली। डीडीए ने एक बड़ा कदम उठाया है। DDA ने दिल्ली के 45 झुग्गी-झोपड़ी यानी जेजे क्लस्टर्स का इन-सीटू यानी उसी जगह पुनर्वास करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इससे जेजे क्लस्टर्स के लगभग 21,229 परिवारों को उसी जगह पक्के मकान मिलेंगे। इन परिवारों को दूर भी नहीं जाना पड़ेगा। इस कदम से एक लाख से अधिक लोगों को फायदा होने की संभावना है। इन लोगों को अतिरिक्त आवास और कमर्शियल डेवलपमेंट के लिए जमीन उपलब्ध हो सकती है। अधिकारियों ने बुधवार को बताया कि दिल्ली विकास प्राधिकरण यानी DDA ने 45 झुग्गी-झोपड़ी यानी जेजे क्लस्टर में रहने वाले लगभग 21,229 परिवारों के इन-सीटू यानी मौजूदा जगह पर ही पुनर्वास की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इस कदम से एक लाख से अधिक लोगों को फायदा होने का अनुमान है। डीडीए की ओर से इन अतिरिक्त आवास के लिए जमीन उपलब्ध कराई जा सकती है। डीडीए ने राष्ट्रीय राजधानी के अलग-अलग हिस्सों में 135.74 एकड़ में फैले 45 झुग्गी-झोपड़ी यानी जेजे क्लस्टरों से जुड़े 15 प्रोजेक्ट के लिए फिजिबिलिटी रिपोर्ट तैयार करने के लिए प्रक्रिया शुरू की है। इस संबंध में 3 ट्रांजेक्शन एडवाइजरों की नियुक्ति करने के लिए रिक्वेस्ट फॉर प्रपोजल यानी आरएफपी जारी किया है। केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय ने अगस्त में मास्टर प्लान ऑफ दिल्ली 2047 को नोटिफाई किया। इस योजना से दिल्ली में ऊंची इमारतें और घनी आबादी वाले नए इलाके बनाने का रास्ता साफ हो गया है। इसके साथ ही 650 से ज्यादा झुग्गी-झोपड़ी वाले इलाकों यानी जेजे क्लस्टर्स में रहने वाले लगभग 17 लाख लोगों को उसी जगह पर पुनर्वास कराया जाएगा। ट्रांजेक्शन एडवाइजर का चयन डिपार्टमेंट ऑफ इकोनॉमिक अफेयर्स (DEA) या नेशनल लैंड मॉनेटाइजेशन कॉर्पोरेशन (NLMC) के साथ सूचीबद्ध फर्मों में से किया जाएगा। ये एडवाइजर चुने गए क्लस्टर की पुनर्वास संबंधी जरूरतों, विकास की संभावनाओं और बुनियादी ढांचे की जरूरतों का आकलन करेंगे। डीडीए के अधिकारियों के अनुसार, प्रोजेक्ट की आर्थिक व्यवहार्यता की जांच की जाएगी और उन्हें लागू करने के लिए उपयुक्त मॉडल सुझाए जाएंगे। उम्मीद है कि फिजिबिलिटी रिपोर्ट से प्रोजेक्ट को व्यवस्थित तरीके से आगे बढ़ाने के लिए तकनीकी और वित्तीय रूपरेखा मिलेगी। इन-सीटू पुनर्वास मॉडल में उसी जगह पर नए मकान बनाए जाते हैं ताकि निवासियों को दूर नहीं जाना पड़े और उन्हें बेहतर घर मिल सके। दिल्ली विकास प्राधिकरण यानी डीडीए के अनुसार, इस प्रोजेक्ट से अतिरिक्त आवास स्टॉक और कमर्शियल स्पेस भी तैयार होगा यानी इस प्रोजेक्ट से नए मकान और दुकानें भी बनेंगी। इससे बड़ी आबादी की जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलेगी।

पार्थिव पटेल का 16 साल बाद फूटा गुस्सा, क्रिकेट चयनकर्ता पर फूटा गुस्सा, क्रिकेट छोड़ बिजनेस करने की दी थी सलाह

नई दिल्ली। भारतीय टीम के पूर्व क्रिकेटर पार्थिव पटेल ने 2010 में चयनकर्ता के साथ हुई बातचीत का हैरतअंगेज खुलासा किया है। वह उस समय भारतीय टीम में वापसी के लिए जमकर मेहनत कर रहे थे। पूर्व विकेटकीपर बल्लेबाज ने दावा किया है कि उस समय चयनकर्ता ने उन्हें क्रिकेट छोड़कर बिजनेस शुरू करने के लिए कहा था। पार्थिव ने बताया कि उनकी चयन को लेकर पहली बातचीत उस समय चीफ सिलेक्टर रहे दिलीप वेंगसरकर से हुई थी। जिन्होंने कड़ी मेहनत जारी रखने की सलाह दी थी। हालांकि वेंगसरकर के जाने के बाद क्रिस श्रीकांत मुख्य चयनकर्ता बने, जिन्हें उन्होंने करारा जवाब दिया। पार्थिव पटेल ने आकाश चोपड़ा के साथ बातचीत में कहा, उस समय मुझे शिकायत नहीं हुई, क्योंकि मुझे पता था कि जब मुझे टीम से बाहर किया गया था, तब मेरा प्रदर्शन सही नहीं था। टीम ने लंबे समय बाद भारत में सीरीज गंवाई थी। लेकिन बाद के वर्षों में एक ऐसा दौर आया जब मुझे लगा, मैं इससे भी ज्यादा क्या कर सकता हूं? ये उस समय हुआ जब मैंने प्रथम श्रेणी क्रिकेट में लगातार पांच पारियां खेलते हुए 500 से ज्यादा रन बनाए। ये अभी तक भारतीय रिकॉर्ड भी है। भारत में फर्स्ट क्लास क्रिकेट में अभी तक कोई भी बल्लेबाज चाहे सचिन तेंदुलकर, विराट कोहली या सुनील गावस्कर हो, लगातार 5 पारियों में 500 रन नहीं बना पाया है। उन्होंने आगे कहा, जब ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए चयन हो रहा था, मैंने तब चयनकर्ता दिलीप वेंगसरकर को फोन किया और पूछा। उन्होंने मुझसे कहा, ये दुर्भाग्यपूर्ण है, अच्छा करते रहो। लेकिन 2011 तक, हर सीजन में 700-800 रन बनाने के बाद, चयन समिति बदल गई। मैंने वेस्ट जोन के नए चयनकर्ता को फोन करके पूछा कि मेरी संभावनाएं क्या हैं, इस पर मुझे चौंकाने वाली सलाह मिली।

कागिसो रबाडा ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ डरबन टेस्ट से बाहर, तीन साल बाद नॉर्खिया की टेस्ट में वापसी

नई दिल्ली। कागिसो रबाडा शुक्रवार को डरबन में शुरू होने वाले दक्षिण अफ्रीका के ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले टेस्ट से आधिकारिक तौर पर बाहर हो गए हैं। रबाडा को विंटर ट्रेनिंग के दौरान हैमस्ट्रिंग में चोट लगी थी और मई के अंत में आईपीएल के बाद से उन्होंने कोई मैच नहीं खेला है। उन्होंने पिछले साल अक्टूबर में पाकिस्तान दौरे के बाद से कोई टेस्ट भी नहीं खेला है। रबाडा ने टेस्ट सीरीज से पहले गेंदबाजी में वापसी जरूर की थी और वीकेंड पर दक्षिण अफ्रीका के इंट्रा-स्क्वाड ट्रेनिंग मैच में हिस्सा भी लिया था। इसके बाद गुरुवार को किंग्समीड में उन्होंने एक और ट्रेनिंग सेशन किया। हालांकि, दक्षिण अफ्रीका ने उन्हें आठ टेस्ट वाले घरेलू सीजन में से पहले पूरी तरह मैच-फिट होने के लिए थोड़ा और समय देने का फैसला किया है। दक्षिण अफ्रीका के कप्तान तेम्बा बवूमा ने कहा, हमने थोड़ा सतर्क रुख अपनाया और उन्हें कुछ अतिरिक्त दिन देने का फैसला किया, ताकि वह 100 प्रतिशत फिटनेस के जितना करीब पहुंच सकें। हालांकि, उन्होंने यह नहीं बताया कि 18 अक्टूबर से शुरू होने वाले दूसरे टेस्ट के लिए रबाडा की वापसी तय है या नहीं। बवूमा ने कहा, हमें अपनी मेडिकल टीम पर भरोसा है कि वह उन्हें उस स्थिति में पहुंचा देंगी, जहां हम उन्हें चाहते हैं। लेकिन उन्होंने अभी आधिकारिक तौर पर कागिसो को हमारे हवाले नहीं किया है। वह अभी मेडिकल टीम की निगरानी में हैं। जैसे ही उन्हें हरी झंडी मिलती है, हम

उम्मीद करते हैं कि वह प्लेइंग इलेवन का हिस्सा होंगे। रबाडा की गैरमौजूदगी में दक्षिण अफ्रीका ने ऐसी इलेवन चुनी है, जिसमें एनरिख नॉर्खिये शामिल हैं। नॉर्खिया मार्च 2023 के बाद पहली बार टेस्ट खेलेंगे। नॉर्खिये अब सीएसए के सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट का हिस्सा नहीं हैं और अप्रैल 2023 के बाद से किसी मैच में उन्होंने आठ ओवर से ज्यादा गेंदबाजी नहीं की है। हालांकि, डरबन में नेट्स पर वह प्रभावशाली रहे हैं और बुधवार को उनकी रफ़्तार ख़ास तौर पर शानदार रही, जिसके बाद टीम में उनकी जगह पक्की हुई। गुरुवार के वैकल्पिक ट्रेनिंग सेशन में दक्षिण अफ्रीका के ज्यादातर खिलाड़ी पहुंचे। सिर्फ बवूमा, महाराज, बॉश और रायन रिकल्टन ट्रेनिंग से गैरहाजिर रहे। बवूमा ने कहा, नॉर्खिये जैसे खिलाड़ी को नजरअंदाज करना मुश्किल है। वह एक्स-फैक्टर हैं। ऐसे बहुत कम खिलाड़ी हैं जो 150 किमी प्रति घंटा से ज्यादा की रफ्तार से गेंदबाजी करते हैं और बतौर बल्लेबाज में ऐसी गेंदबाजी का सामना करना नहीं चाहूंगा। तेज़ गेंदबाज़ी के मामले में वह हमारी रणनीति में अच्छी तरह फिट बैठते हैं। रेड-बॉल क्रिकेट में उनके पास ज्यादा ओवर गेंदबाज़ी करने का अनुभव नहीं है, लेकिन वह गेंदबाज़ी कोचों के साथ काम कर रहे हैं।

यहां सीरीज़ से पहले हमें जितना समय मिला है, उसमें भी वह नेट्स में काफ़ी प्रभावशाली रहे हैं। इसलिए एनरिख़ नॉर्खिये को मौक़ा देना सोच-समझकर लिया गया फ़ैसला था। नॉर्खिये के चोटिल होने के इतिहास, खास तौर पर पीठ में स्ट्रेस फ्रैक्चर को देखते हुए, उनके वर्कलोड मैनेजमेंट पर भी दक्षिण अफ्रीका की मेडिकल टीम नजर रखेगी। बवूमा ने कहा, इस व्यस्त सीजन में दक्षिण अफ्रीका के सभी गेंदबाजों की तरह उनका भी जितना संभव हो सके उतना सही तरीके से मैनेजमेंट किया जाएगा। सच कहूं तो मेरा ध्यान अभी कल होने वाले मैच पर है। नॉर्खिया के साथ तेज गेंदबाजी आक्रमण में मार्को यानसन और वियान मुल्डर होंगे। दूसरे ऑलराउंडर के तौर पर कॉर्बिन बॉश की जगह मुल्डर को चुना गया है। बवूमा ने कहा, वियान बल्ले से आपको थोड़ा ज्यादा देता है। नंबर 6 या 7 पर आपको ऐसे खिलाड़ी की ज़रूरत होती है जो बड़ी पारियां खेल सके। वियान ने दिखाया है कि वह ऐसा कर सकते हैं। नई गेंद से भी, जिस भूमिका में हम उन्हें देखते हैं, हमें भरोसा है कि वह प्रभावी साबित हो सकते हैं। वह अच्छे स्लिप कैचर भी हैं, इसलिए यह भी उनके पक्ष में जाता है। लेकिन सबसे बड़ी वजह उनकी बल्लेबाजी की क्षमता रही। साउथ अफ्रीका ने अपनी इलेवन में दो स्पिनर्स केशव महाराजऔर साइमन हार्मर को भी शामिल किया है। दोनों ने आखिरी बार नवंबर 2025 में भारत में खेले गए टेस्ट में साथ खेला था। टीम मैनेजमेंट को उम्मीद है कि तटीय इलाक़े की धीमी पिचें इस स्पिन जोड़ी के लिए मददगार होंगी।

बवूमा ने कहा, इस स्पिन जोड़ी ने हमारे गेंदबाज़ी आक्रमण में एक और आयाम जोड़ा है। हम हमेशा तेज़ गेंदबाज़ी पर भरोसा करते रहे हैं, लेकिन जब परिस्थितियां स्पिनर्स के लिए मददगार रही हैं, तो दोनों ने प्रभावी भूमिका निभाई है। उनके बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा है, जो हमेशा मदद करती है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले टेस्ट के लिए दक्षिण अफ्रीका की टीम - एडेन मारक्रम, रायन रिकेल्टन, डेविड बेडिंघम, तेम्बा बवूमा (कप्तान), ट्रिस्टन स्टब्स, वियान मुल्डर, काइल वेरेन (विकेटकीपर), मार्को यानसन, केशव महाराज, साइमन हार्मर, एनरिक नॉर्खिये

कुसल मेंडिस बने श्रीलंका के नए टेस्ट कप्तान, धनंजय डिसिल्वा की जगह लेंगे

नई दिल्ली। श्रीलंका के टेस्ट कप्तान धनंजय डिसिल्वा ने गुरुवार को तुरंत प्रभाव से टेस्ट कप्तान का पद छोड़ दिया, जिसके बाद कुसल मेंडिस को यह जिम्मेदारी सौंपी गई। अगले महीने पाकिस्तान के खिलाफ होने वाली दो टेस्ट की सीरीज कप्तान के रूप में मेंडिस की पहली सीरीज होगी। मेंडिस पहले ही वनडे अंतरराष्ट्रीय और टी20 अंतरराष्ट्रीय टीम की अगुवाई कर रहे हैं। श्रीलंका के लिए 31 वर्षीय मेंडिस ने 75 टेस्ट सहित कुल 343 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले खेले हैं। डिसिल्वा ने पद छोड़ते हुए कहा था कि अब अगली पीढ़ी को बागडोर सौंपने का समय आ गया है। अपने करियर में 69 टेस्ट खेलकर 13 शतक समेत 4400 से अधिक रन बनाने वाले 35 वर्ष के धनंजय बतौर खिलाड़ी चयन के लिये उपलब्ध रहेंगे। जनवरी 2024 में टेस्ट कप्तान बने डिसिल्वा ने श्रीलंका क्रिकेट चयन समिति को अपने फैसले से अवगत करा दिया है। उन्होंने चयन समिति को लिखे पत्र में कहा मेरा मानना है कि अब बागडोर अगली पीढ़ी को सौंपी जानी चाहिये। श्रीलंका क्रिकेट के सीईओ एश्ले डिसिल्वा ने क्रिकेट के पारंपरिक प्रारूप में योगदान के लिये धनंजय को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा, श्रीलंका क्रिकेट उन्हें भविष्य के लिये शुभकामना देता है और बतौर कप्तान योगदान के लिये धन्यवाद भी। मौजूदा वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप चक्र में श्रीलंका का टॉप-दो में जगह बनाना लगभग नामुमकिन हो गया है, इसलिए डी सिल्वा को लगा होगा कि कप्तानी सौंप देना सही रहेगा, ताकि नए कप्तान को अगले चरण के शुरू होने से पहले टीम को समझने और अपनी जगह बनाने का मौका मिल सके। श्रीलंका क्रिकेट के चीफ एग्जीक्यूटिव एश्ले डी सिल्वा ने एक बयान में कहा, श्रीलंका क्रिकेट धनंजय के बाकी करियर के लिए उन्हें शुभकामनाएं देता है और हमारी टेस्ट टीम को दी गई उनकी कमानी के लिए उनका शुक्रिया अदा करता है। बयान में यह भी कहा गया कि एसएलसी एक खिलाड़ी के तौर पर उनकी लगातार उपलब्धता का स्वागत करता है। यह इस्तीफा टेस्ट टीम के लिए एक औसत दौर में आया, जो बहुत बुरा तो नहीं था, लेकिन बहुत अच्छा भी नहीं। जिसमें टीम ने इस साल दोनों सीरीज 1-0 से गंवा दीं। पहले वेस्टइंडीज में और फिर घरेलू मैदान पर भारत के खिलाफ। कुल मिलाकर, डी सिल्वा की कप्तानी में श्रीलंका का रिकॉर्ड सात जीत, आठ हार और तीन ड्रॉ का रहा। कप्तान के तौर पर डी सिल्वा का सबसे अच्छा साल 2024 रहा, जब टीम ने बांग्लादेश में 2-0 से सीरीज जीती, फिर द ओवल में जीत हासिल की (हालांकि वह सीरीज वे 2-1 से हार गए थे), और उसके बाद घरेलू मैदान पर न्यूज़ीलैंड को 2-0 से हराया। हालांकि, 2024 के आखिर और 2025 की शुरुआत के बीच दक्षिण अफ्रीका (बाहर) और ऑस्ट्रेलिया (घर पर) लगातार चार हार का दौर भी आया। लेकिन उनके कार्यकाल में श्रीलंका के टेस्ट क्रिकेट में सबसे खास बात मैचों का कम होना थी।

भुवनेश्वर कुमार को 4 साल बाद क्यों मिली भारतीय टीम में एंट्री? सहायक कोच सितांशु कोटक ने बताई वजह

नई दिल्ली। सहायक कोच सितांशु कोटक ने गुरुवार को कहा कि भुवनेश्वर कुमार के अपार अनुभव और पिछले दो आईपीएल सत्र में उनकी शानदार फॉर्म ने उन्हें न्यूजीलैंड सीरीज के लिए भारत की टी20 अंतरराष्ट्रीय टीम में वापस जगह दिलाई है। छत्तीस वर्षीय अनुभवी तेज गेंदबाज आखिरी बार नवंबर 2022 में न्यूजीलैंड सीरीज में भारत के लिए खेले थे। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के लिए शानदार प्रदर्शन के बाद भुवनेश्वर ने राष्ट्रीय टीम में वापसी की। उन्होंने 2025 और 2026 में आरसीबी की लगातार खिताबी जीत में अहम भूमिका निभाई थी। उन्होंने इन दो सत्र में 45 विकेट लिए थे (2025 में 17 और 2026 में 28)। भारतीय टीम वेस्टइंडीज के खिलाफ जारी पांच मैच की सीरीज के बाद न्यूजीलैंड के खिलाफ टी20 अंतरराष्ट्रीय सीरीज खेलेगी। कोटक ने संकेत दिया कि चयनकर्ताओं को शायद युवा गेंदबाजी ग्रुप में अनुभव जोड़ने की जरूरत महसूस हुई होगी। कोटक ने वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच की पूर्व संध्या पर मीडिया से बातचीत में कहा, चयनकर्ताओं पर निर्भर करता है। लेकिन मैं आपको अपनी सोच के आधार पर जवाब दे सकता हूं। इंग्लैंड में, जब बुमराह आसपास नहीं थे और बहुत सारे युवा गेंदबाज खेल रहे थे तो मुझे व्यक्तिगत रूप से लगा कि आप अनुभव को मात नहीं दे सकते। उन्होंने कहा, युवा गेंदबाज अच्छे हैं, वे अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं और उनका चयन हो रहा है, लेकिन किसी स्तर पर आपको कुछ अनुभव की भी जरूरत होती है। कोटक ने कहा,यह एक कारण हो सकता है। दूसरी बात यह है कि भुवनेश्वर पिछले दो सत्र से आईपीएल में बहुत अच्छा कर रहे हैं। इसलिए चयनकर्ताओं ने सोचा होगा कि न्यूजीलैंड की परिस्थितियों और बाकी चीजों के लिए, निश्चित तौर पर वह अच्छा कर रहे हैं और हमें कुछ अनुभव की जरूरत है।

एबी डिविलियर्स ने विराट कोहली के मौजूदा अवतार को 2016 से भी बेहतर बताया, आंकड़े भी दे रहे गवाही

नई दिल्ली। भारतीय टीम के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली शानदार फॉर्म में हैं। वेस्टइंडीज के खिलाफ हाल ही में खत्म हुई वनडे सीरीज में उन्होंने दमदार प्रदर्शन किया। हालांकि उनकी बल्लेबाजी में ज्यादातर प्रशंसकों और पूर्व क्रिकेटर्स ने बदलाव देखा है। कोहली अभी पारी की शुरुआत से ही ज्यादा आक्रामक होकर खेल रहे हैं। सीरीज के दौरान कोहली ने खुद कहा था कि उन्होंने खुद को एक ऐसी नई चुनौती में डाल लिया है, जहां वह अपने खेल को और भी ऊंचे स्तर पर ले जा सकते हैं। पहले वनडे में कोहली ने दमदार शतक लगाया और वनडे में 15000 रन भी पूरे किए थे। कोहली के दोस्त एबी डिविलियर्स ने भी माना है कि कोहली इस समय 2016 से भी बेहतर नजर आ रहे हैं। वेस्टइंडीज के खिलाफ वनडे सीरीज में विराट कोहली के अप्रोच में बदलाव दिखा है। वह इस समय सिर्फ वनडे फॉर्मेट खेल रहे हैं और उन्होंने कहा है कि भारत के लिए वर्ल्ड कप 2027 उनका आखिरी टूर्नामेंट होगा। साउथ अफ्रीका सीरीज के दौरान वह अपनी लय में नजर आए और तब से अब तक कोहली ने 12 वनडे में 854 रन बनाए हैं। उन्होंने वेस्टइंडीज के खिलाफ नाबाद 139 रन की पारी खेली थी। इस दौरान उन्होंने 10 चौके और 9 छक्के लगाए। उन्होंने इस वनडे में अपने करियर की एक पारी में सबसे ज्यादा छक्के लगाने का रिकॉर्ड भी बनाया। इंडिया टूडे से बातचीत में एबी डिविलियर्स ने कहा कि उनका (विराट कोहली) मौजूदा अवतार एक बेहतर वर्जन है क्योंकि वह अब काफी तरोताजा और पूरी तरह से आजाद महसूस कर रहे हैं।

डिविलियर्स का मानना है कि चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के दौरान उन्होंने मौजूदा अवतार की झलकियां देखीं लेकिन उन्हें लगा कि भारतीय पूर्व कप्तान कहीं अटक गए और पुरानी आदतों की ओर लौट गए। एबी डिविलियर्स ने कहा, हां, ये अच्छा सवाल है। ये कहना मुश्किल है। मुझे लगता है कि ये बेहतर अवतार है क्योंकि वह काफी तरोताजा है। और वहां मैदान पर आप देख सकते हैं कि वह पूरी तरह फ्री है। उन्होंने यूएई में आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के दौरान इसकी झलक दिखाई थी। मैंने उन्हें एक अलग भूमिका में खेलते हुए देखा था और वह एक बार फिर अटक गए थे। फिर पुरानी आदतों पर चले गए थे। और फिर वापस अपनी पुरानी आदतों में लौट आए थे। 2016-2018 के दौरान विराट कोहली अपने करियर के सर्वश्रेष्ठ फॉर्म से गुजर रहे थे। उन्होंने 66 मैचों में 3401 रन बनाए और उनका स्ट्राइक रेट 100 से ऊपर रहा। उन्होंने 43 छक्के भी लगाए थे।

वैभव सूर्यवंशी कहीं गायब ना हो जाएं, कपिल देव ने किया आगाह; बोले- विनोद कांबली को

नई दिल्ली। युवा सनसनी वैभव सूर्यवंशी ने कम वक्त में अपनी एक अलग पहचान बना ली है। वह अभी 15 साल के हैं और भारत ही नहीं बल्कि विश्व क्रिकेट जगत में चर्चा का विषय बन हुए हैं। सलामी बल्लेबाज सूर्यवंशी ने आईपीएल में धमाल मचाने के बाद टीम इंडिया में एंट्री की। उन्होंने जुलाई 2026 में इंग्लैंड में इंटरनेशनल डेब्यू किया। वह इंग्लैंड में फ्लॉप रहे लेकिन जिम्बाब्वे में छाप छोड़ने में कामयाब रहे। वह भारतीय टी20 टीम के साथ एशियन गेम्स के लिए जापान भी गए। सूर्यवंशी को अभी तक भारतीय सरजमीं पर इंटरनेशनल मैच खेलने का मौका नहीं मिला है। 1983 विश्व कप विजेता कप्तान कपिल देव को सूर्यवंशी की काबिलियत पर संदेह नहीं है। हालांकि, भारत के महान ऑलराउंडर कपिल ने सूर्यवंशी को आगाह किया है। उनका मानना है कि सूर्यवंशी को वर्ल्ड क्रिकेट में स्टार बनने के लिए लंबा सफर

तय करना होगा। कपिल ने पूर्व बल्लेबाज विनोद कांबली का उदाहरण दिया, जिन्होंने तेजी से नाम कमाया और फिर गायब हो गए। कांबली का 90 के दशक में बेहद प्रतिभाशाली क्रिकेटरों में शुमार होता था मगर वह भारत के लिए 17 टेस्ट 104 वनडे ही खेल पाए। कपिल ने टाइम्स ऑफ इंडिया से कहा,अभी बहुत जल्दी है। क्या उसमें काबिलियत है हां। लेकिन क्रिकेट में ऐसे बहुत से लोग हुए हैं जो बहुत काबिलियत के साथ आए, फिर गायब हो गए। विनोद कांबली को देखिए। हम उसके बारे में क्या कहेंगे? वैभव 16 साल का है। उसे और तीन साल दें, फिर हम बात करेंगे। जब उसका लाइफस्टाइल बदलेगा तो उसकी सोच भी बदलेगी। तब हमें पता चलेगा कि अगले दो साल बाद वह कैसा दिखेगा। यह उसकी परफॉर्मेंस देखने से ज्यादा जरूरी है। हमने रोहित, विराट को देखा है। हमने सचिन को और पहले देख चुके हैं। उन्होंने हमें बहुत गर्व महसूस कराया। लेकिन आप हमेशा अगले हीरो की तलाश में रहते हैं। आप हमेशा पूछते हैं, अगला हीरो कौन है एक क्रिकेटर के तौर पर मुझे यह देखना पसंद है कि वह कौन सा युवा लड़का है जिसे यह मौका मिला है, जो विराट कोहली की जगह ले सकता है। और 15 साल तक खेल सकता है। मेरा दिमाग यही ढूंढता है। वैभव सूर्यवंशी फिलहाल वेस्टइंडीज के खिलाफ जारी पांच मैचों की टी20 सीरीज में भारतीय स्क्वॉड का हिस्सा हैं। उन्हें लखनऊ में पहले टी20 में प्लेइंग इलेवन में मौका नहीं मिला। हालांकि, सूर्यवंशी को भारतीय टीम मैनेजमेंट शुक्रवार को वेस्टइंडीज के खिलाफ रांची में दूसरे मैच में अभिषेक शर्मा के साथ पारी का आगाज करने के लिए भेज सकता है। संजू सैमसन खराब फॉर्म से जूझ रहे हैं। सैमसन पिछली चार पारियों में केवल 29 रन बना पाए हैं जिनमें उनका हाईएस्ट स्कोर 11 है। एशियन गेम्स में सूर्यवंशी और अभिषेक ने ही पारी का आगाज किया था और सैमसन तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए उतरे थे। सूर्यवंशी ने अब तक मिले अवसरों पर यह साबित कर दिया कि वह खेल के छोटे प्रारूप के लिए उपयुक्त बल्लेबाज है। बाएं हाथ के इस बल्लेबाज के पास कई तरह के शॉट हैं और वह अपने आक्रामक अंदाज से विपक्षी टीम को शुरू में ही दबाव में ला सकते हैं।

वनडे में 500 रन भी बन सकते हैं, ड्वेन ब्रावो ने गेंदबाजों को दी बदलने की सलाह; क्रिस गेल हुए खुश

नई दिल्ली। वेस्टइंडीज के पूर्व ऑलराउंडर ड्वेन ब्रावो का मानना है कि बल्लेबाजों के बढ़ते दबदबे को देखते हुए भविष्य में वनडे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट की एक पारी में 500 रन भी बन सकते हैं। उन्होंने इसके साथ ही गेंदबाजों से प्रासंगिक बने रहने के लिए अपने कौशल को बढ़ाने और नए-नए तरीके अपनाने की अपील की। ब्रावो वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स के दौरान वेस्टइंडीज के अपने पूर्व साथी और स्टार बल्लेबाज क्रिस गेल के साथ बात कर रहे थे। ड्वेन ब्रावो ने कहा, बल्लेबाजों के कौशल में काफी सुधार हुआ है। अब गेंदबाजों को सुधार करना होगा और अपने खेल में नई चीजों को जोड़ना होगा। विश्व क्रिकेट में हो रहे बदलावों के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए उन्हें अपने कौशल को काफी निखारना होगा। उनकी यह टिप्पणी ऐसे समय में आई है जब आधुनिक क्रिकेट में बड़े स्कोर और आक्रामक बल्लेबाजी खेल की पहचान बनते जा रहे हैं। हाल में भारत और वेस्टइंडीज के बीच हुई वनडे सीरीज ने भी आक्रामक बल्लेबाजी के बढ़ते प्रभाव को एक बार फिर सामने रखा है। पूर्व ऑलराउंडर का मानना है कि मौजूदा रुझान के चलते वनडे क्रिकेट में स्कोरिंग का स्तर भी ऐसी ऊंचाई तक पहुंच सकता है, जिसकी कभी कल्पना नहीं की गई थी। उन्होंने कहा, खेल बदल रहा है। इसकी गति तेज हो रही है और यह अच्छा है लेकिन गेंदबाजों को भी इससे तालमेल बिठाना होगा। जिस तरह से बल्लेबाज निर्भीक होकर बल्लेबाजी कर रहे हैं उसे देखते हुए मुझे खुशी है कि मैं खेलना छोड़ दिया है। ड्वेन ब्रावो का मानना है कि बल्लेबाजों के दबदबे को देखते हुए वनडे में 500 रन भी बन सकते हैं। वहीं, गेल ने बल्लेबाजों की नई पीढ़ी के निडर रवैये का स्वागत करते हुए कहा कि शुरुआत से ही आक्रामक खेलने की उनकी प्रवृत्ति के कारण हाल में बड़े स्कोर देखने को मिले हैं।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक उमेश कुमार तिवारी द्वारा सैटे लाईट बाबा पब्लिशिंग हाउस लि. प्लाट नं. 20/22 बादशाही रोड़ बुढ़पुर दिल्ली-110036 से मुद्रित व बी-91 स्ट्रीट नं0 6, बापरौला विहार, दास गार्डन, नई दिल्ली110043 से प्रकाशित। सभी विवादों का निपटारा दिल्ली की सीमा में आने वाले समस्त न्यायालयों और फोरमों से किया जायेगा। D.C.P. LICENSING NO. (F2) (G11) PRESS 15 SEPT, 2009